सोच में इज़ाफे की पत्रिका

# सदीनामा

वर्ष-16 ❐ अंक-12 ❐ 1 से 31 अक्टूबर, 2016 ❐ पृष्ठ-24 ❐ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 मूल्य-5.00 रुपए

# काश! हिन्दी की महत्ता भारतीय कम्युनिष्ट पार्टियाँ समझ पातीं!

मैं अपने एक पाठक की फेसबुक टिप्पणी पर ध्यान देना चाहूँगा। उन्होंने एक बड़ी समस्या की ओर ध्यान खींचा है। लिखा है–

"भारत गाँवों का देश है। यहाँ की ग्रामीण जनता मुख्य रूप से हिन्दी बोलती है और उसका मुख्य पेशा कृषि है। लेकिन मुझे लगता है कि भारत के कम्युनिष्टों ने दोनों में से किसी का साथ नहीं दिया– न हिन्दी का, न ही कृषि का। गाँवों का भी नहीं। अपने प्रयोजन के लिए इनका इस्तेमाल खूब किया, लेकिन इन्हें मजबूती नहीं दी।" (यहाँ मैं का मतलब जगदीश्वर चतुर्वेदी हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्व विद्यालय समझा जाये–सं०)

मैं इस बात से बुनियादी तौर पर सहमत हूँ कि हिन्दी के लिए कम्यूनिष्टों ने ज्यादा कुछ नहीं किया। मैं इस पूरी समस्या को कुछ बड़े फलक पर रखकर देखना चाहूँगा। इस समस्या का एक पहलू है जो कम्यूनिष्ट पार्टी के संगठनों से जुड़ा है, दूसरा पहलू वह है जो मार्क्सवादियों के ज्ञानकांड से जुड़ा है। यह सच है कि कम्युनिष्ट पार्टियों ने संगठन के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत कम काम किया है। इससे भी बड़ा सच यह है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र के मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों, खासकर हिन्दी के मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों ने हिन्दी साहित्य, कविता, कहानी, भाषा, आलोचना आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किया है। हिन्दी की तस्वीर सिर्फ राजनीतिक प्रौपेगेण्डा के आधार पर नहीं बनायी जानी चाहिए। यह सच है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र में कम्युनिष्टों के प्रचार के माध्यम बेहद कमजोर हैं। उसका ही यह दुष्परिणाम है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र में कम्युनिष्ट संगठन सिकुड़ते चले गए हैं। हिन्दी में प्रचारतंत्र की महत्ता का अभी कम्युनिष्ट पार्टियों में बोध ही पैदा नहीं हुआ है। फलत: कम्युनिष्ट आन्दोलन का हिन्दी भाषी क्षेत्र में विकास नहीं हो पाया है। साथ ही अभी जो नेतृत्व है उसकी हिन्दी भाषी यथार्थ पर पकड़ कम है। इन इलाकों के संगठनकर्ताओं के प्रति उनके मन में समानता के भाव का अभाव है। वरना यह कैसे संभव है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र से माकपा के पोलित ब्यूरो में एक भी सदस्य न हो। ***माकपा जैसी विशाल पार्टी में 50 करोड़ की आबादी का पोलित ब्यूरो में कोई भी व्यक्ति न होना इस बात का संकेत है कि पार्टी अभी भी संगठन बनाने के मामले में पुराने ढंग से सोचती है।*** उसके पास पिछड़े क्षेत्रों से केन्द्रीय नेतृत्व में ऊपर लाने के लिए संतुलित समझ का अभी तक विकास नहीं हुआ है अथवा यो कहें कि वह अभी क्षेत्रीय दवाबों में दबी पड़ी है। आज भी उनका मानना है कि जिन इलाकों में संगठन ज्यादा मजबूत है उन इलाकों से ही सर्वोच्च नेतृत्व के लोग रखे जाएंगे। इस आधार पर कभी भी पिछड़े इलाकों से प्रतिभावान मार्क्सवादी

**शेष पृष्ठ 22 पर**

# युद्ध का उन्माद युद्ध से भी भयंकर है

पाकिस्तान में जब भी बम फटते हैं। पाकिस्तानी मीडिया भारत पर दोषारोपण लगाती हैं। प्रमाण कुछ नहीं दे पातीं पर जब भारत में आतंकवादी घटनाएं होती हैं तो हम प्रमाण भी पाते हैं, देते भी हैं, नतीजा सिफर। क्या पूरी दुनियाँ में इस तरह की स्थिति में दूसरा कोई भी देश है ? ऐसा देश ईजराइल है जिसको स्टेट टेररिज्म का सामना सबसे अधिक करना पड़ा है। हर आतंकवादी घटना के बाद युद्ध का उन्माद बढ़ने लगता है जो एक स्वाभाविक घटना है। अब जब हमें प्रमाण मिल रहे हैं तो हम क्यों नहीं इसी तरह की समस्या से ग्रसित देश से सलाह लें। युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं वह भी इक्कीसवीं सदी में। सौ साल पीछे जायें या हजारों साल अहिंसा का विकल्प कभी हिंसा नहीं हो सकती। पर अहिंसा की रक्षा तभी संभव है जब आपके दुश्मन आपसे भयभीत रहें या आपको समझे ***"क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल है।"***

जिस भूख, गरीबी से हम तीसरी दुनियां के देश लड़ रहे हैं उसे जीत जरूरी है। हथियारों, आधुनिकतम हथियारों की खरीद के पैसों का सदुपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य में खर्च कर सकते हैं। अपना ढांचागत विकास कर सकें अपनी सोच को विस्तार दे सकें। हमारे पड़ोसी देशों को यह समझना चाहिए। अपनी संप्रभुता के लिये हम कुछ भी कर सकते हैं और हम करेंगे। अपने पड़ोसियों के साथ बात करनी चाहिए।

छद्म युद्ध का जबाब छद्म युद्ध ही हो सकता है पर परिणाम भी आने चाहिए। हमने कई युद्ध देखे हैं हर बार हम आर्थिक रूप से बोझिल हुए हैं। यह इक्कीसवीं सदी का नया युद्ध है जिसकी कीमत सीधे युद्ध से कम नहीं होगी। हम युद्ध के उन्माद से बचें और न कोई ऐसा दबाव बनाएं। हम शांति से रहें और आतंकवाद से तरीके से सलटें।

आपरेशन थण्डर बोल्ट में इजराइल ने दूसरे देश में जाकर अपने देश पर हुए आतंकी हमले का बदला लिया। जब तक उस देश के लोग समझ पाते कमाण्डो अपना काम करके निकल गये। इजराइल ने अपने खिलाड़ियों की हत्या करने वाले आतंकवादियों को अलग-अलग देशों में घुस-घुस कर मारा। लोग तो कहते हैं कि उनके पूर्व प्रधानमंत्री ऐसे ही एक आपरेशन में महिला बनकर नाच रहे थे और आतंकवादियों को गोली से भून दिया।

हमें नये तरह की लड़ाइयों के लिए नये तरह के हथियार खोजने पड़ेंगे। जिनका स्वरूप कितना मारक होगा पहले से तय करना असंभव है क्योंकि तकनीक का अपना महत्व है। भविष्य के हथियार हवा, पानी और जनसंख्या भी हो सकती है।

जितेन्द्र जितांशु

**संपादक मण्डल**

उप-संपादक : **तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य**
संपादकीय सलाहकार: **यदुनाथ सेउटा**
संपादक : **जितेन्द्र जितांशु**
विशेष सहयोग : **आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी तथा राजेन्द्र कुमार रुईया (अमेरिका)**

**सभी अवैतनिक हैं।**

**पत्राचार का पता :**

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park,
Kolkata-700 033
West Bengal. India
☎: 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

# दादी के हाथ दियासलाई तक

● चन्द्रिका प्रसाद पाण्डेय 'अनुरागी'

(कोलकाता शहर के गीतकार पर नई कविता में भी अच्छी खासी उपस्थिति, बेहतर सोच एवं बेहतर इंसान–सं०)

हार नहीं मानते
अंधेरे में भी
पहुँच ही जाते हैं
दादी के हाथ
दियासलाई तक,
क्षण भर में
माचिस की तिलियों से
चन्द्रगुप्त मौर्य की
तरह प्रगट होती है
लपलपाती हुई लौ
जलती हुयी लौ को
छूने का साहस नहीं
कर पाता कोई
अंधेरा,
लौ ललकारती है
सूर्य को चन्द्रमा को
तारों को
जैसे, मंगल पाण्डेय
ललकार रहा हो
देशवासियों को
डरो नहीं, डरो नहीं
डरो नहीं, यह मैं
जल रही हूँ
मेरे साथ खड़े हो जाओ
मुझे जलाये रखने का
उपाय करो
लौ जल रही है
धीरे-धीरे ढीली
पड़ने लगती है
अंधेरों की घेराबंदी
सूर्य की अनगिनत रक्ताभ
किरणें,
एकाएक आक्रमण कर
देती हैं
अंधेरी गुफाओं में
भाग जाता है
लौ विलीन हो जाती है
महात्मा गांधी की तरह

**सदीनामा फेसबुक पर भी उपस्थित है**

- सदीनामा का फेसबुक पेज पसन्द (लाइक) करें।
- रचनाओं के बारे में अपने विचार साझा करें।
- सदीनामा में प्रकाशित होने वाले विचार विमर्श शीर्षक पर अपनी प्रतिक्रिया दें।
- हमारी बेबसाइट www.sadinama. com पर जाएं।
- आज ही सदीनामा से जुड़ें।

**सुमिता मुखर्जी और पापिया भट्टाचार्य**

# एकदम ठीक

(शहर की संस्था नीलांबर ने इन्हें कविता कोलाज में स्थान दिया –सं०)

कॉलेज के नाम पर
खुद के आवारापन से,
घर के उबाऊ रोजमर्रा के कामों से
और डींगबाज दोस्तों से,
ताखे पर आ बैठती चिड़चिड़ी गौरैयों के
टोह लेते सवालों से

मैं फरार हुआ,

और किसी पार्क के कोने में थोड़ा घबराया मिला
खुद को ढूंढता मिला!

मैं एग्जाम में
पेन की रिफिल से गायब हुआ
तो पन्नो पर मुँह बाये फैली
किसी कहानी सा मिला

उसका शीर्षक न ढूंढ पाने की कुंठा में मिला!

और प्रेम से भागा,
तो कविता में आये किसी नए बिंब सा मिला
उन पहेलियों में
अपना चेहरा छुपाते मिला!

मैं भागा,

शताब्दियों/विभिन्न कालक्रमों में
मनुष्य में हुए विकास क्रम से सबकुछ समझ जाने के भ्रम से,
तो मुझे मनुष्य से मनुष्य तक आने की जद्दोजहद में
एक और मनुष्य मिला

फिर मैं खुद को एकदम ठीक मिला!

● वीरू सोनकर
Mobile : 7275302077
veeru_sonker@yahoo.com

# "खिड़की से आकाश" का लोकार्पण

कोलकाता, 18 सितम्बर, छपते-छपते सभागार में डॉ० मुक्ता के काव्य संग्रह "खिड़की से आकाश" का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे आलोचक श्रीनिवास शर्मा, स्वागत भाषण रखा छपते-छपते समूह के सम्पादक विश्वम्भर नेवर ने। लोकार्पण से पहले प्रभाकर श्रोत्रिय को एक मिनट के मौन रखा गया। बात शुरू की विश्वभारती के प्राध्यापक डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी ने उन्होंने डॉ० मुक्ता की कविता को समकालीन मोर्चे, समकालीन दखल, कविता में दखल के साथ स्त्रीवादी लेखिका के विमर्शों को रेखांकित किया। बंदिनी नारी उपेक्षिता (1908) तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'काव्येर उपेक्षिता उर्मिला' के साथ 110 वर्ष बाद चीजें बदल रही हैं। पुस्तक पर बोलते हुए डॉ० गीता दूबे ने कहा कि डॉ० मुक्ता की रचनाएँ सामूहिक मुक्ति की बात करती हैं। वहीं डॉ० इतू सिंह ने अपनी पाठकीय अनुभूतियों को रेखांकित करते हुए कहा कि ये स्त्री चेतना और बोध की कविताएं हैं। डॉ० मुक्ता ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने यह संग्रह एक मुहिम की तरह निकाला है। प्रकाशक अरविन्द वाजपेयी और श्रीनिवास शर्मा के अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। संचालन डॉ० उषा साह ने किया इस अवसर पर शहर के बहुत से कवि साहित्यकार उपस्थित थे। यह रपट **जितेन्द्र जितांशु** ने लिखी।


## सदीनामा के तत्वावधान में

**Six Months Translation Course**

**श्याम बाजार मेट्रो के पास**

**बुधवार–** सायं 6 से 8.30

**शुक्रवार –** सायं 6 से 8.30

व्यवस्थापिका : **पूजा मिश्रा**

मो० : 9874254775


# महाकवि सूरदास के प्रति

● **महेन्द्र जैन**

काव्य गगन के भास्कर, हे कविकुल शृंगार।
मातु शारदे सुत तुझे, अर्पित नमन हजार।।

हृदय सरित से थी बही, जब भावों की धार।
सुरभित कुसुमित हो गया, काव्य चमन मनहार।।

थे चाहे जन्मांध तुम, किया सजीव बखान।
दिव्यदृष्टि का था मिला, सूर तुझे वरदान।।

वात्सल्य, शृंगार रस, उच्चकोटि उपहार।
कालजयी है बन गया, रचना का संसार।।

कृष्ण चरित रच था दिया, योग भक्ति का ज्ञान।
हृदय कमल पुष्पित हुआ, करके मधु रसपान।।

भ्रमर गीत के रचयिता, गीत काव्य सरताज।
है उपकृत पाकर तुझे, सब साहित्य समाज।।

– 871, सेक्टर-13, हिसार (हरियाणा)
मोबाइल : 094166-74411


## आगे आएं हाथ बढ़ाएं

**आपको पत्रिका अच्छी लगी हो तो**

- नियमित पढ़ने के लिए – सदस्य बनें
- स्तरीय पत्रिका लगे – रचनाएं भेजें
- पुराने सदस्य हैं - नवीनीकरण कराए
- किसी गतिविधि को बढ़ाना है– हमें लिखें
- कोई असाध्य रोग है– कोलकाता आएं।
- कोई योजना है– हमें लिखें

गंगासागर/पुरी/दार्जिलिंग/सिक्किम/ उत्तर पूर्व जाना है– हमारे विशेषांक पढ़ें।

# डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय

## शोक प्रस्ताव

(19.12.1938 – 15.9.2016)

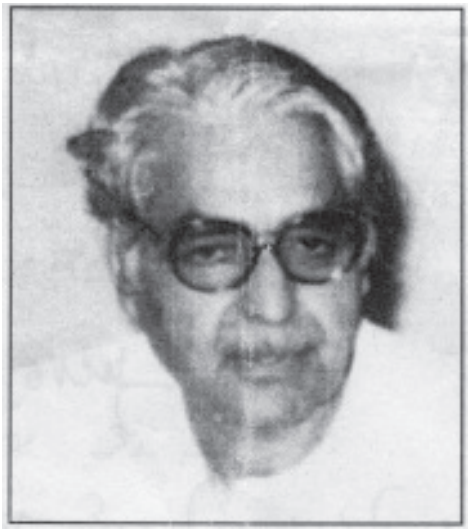

हम सब उनके प्रति अपनी श्रद्धा निवेदन करते हैं

हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार और भारतीय भाषा परिषद के पूर्व निदेशक डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय के आकस्मिक निधन से भारतीय भाषा परिषद परिवार सहित कोलकाता का वृहद साहित्यिक समाज स्तब्ध और व्यथित है। **भारतीय भाषा परिषद के साहित्यिक मुखपत्र 'वागर्थ' की परिकल्पना और उसे निरन्तर प्रकाशनशील बनाने का श्रेय डॉ० श्रोत्रिय को ही है।** भारतीय साहित्य, संस्कृति, शिक्षा एवं भारतीय दर्शन में आपकी गहरी आस्था और अनुराग था। सामाजिक सरोकारों के प्रति भी डॉ० श्रोत्रिय सदैव सजग, सतर्क एवं मुख रहे।

डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय जी का साहित्यिक परिचय मुख्यत: एक आलोचक के रूप में रहा है, पर इसके साथ-साथ एक कुशल निबंधकार और नाटककार भी थे। परिषद के अनेकानेक महत्वपूर्ण ग्रंथों के प्रकाशन में आपकी भूमिका उल्लेखनीय रही है। आपका व्यक्तित्व सरल और सौम्य था। डॉ० श्रोत्रिय का निधन साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति है। डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय की प्रेमल स्मृति हमारे हृदय में दीर्घकाल तक स्पंदित होती रहेगी।

# शायर अनवर बाराबंकी की शोकसभा और कवि सम्मेलन

26 सितम्बर, कोलकाता, काशीपुर क्षेत्र के आयुस क्लब में मरहूम शायर अनवर बाराबंकी की शोक सभा हुई जिसकी अध्यक्षता भानुप्रताप त्रिपाठी 'सरल' ने की। शोक सभा में मुज़तर इफ्तेखारी ने उन पर लिखा अपना आलेख पढ़ा। उन पर कई लोगों ने वक्तव्य रखे। दूसरे सत्र में कवि सम्मेलन हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि थे कवि गिरिधर राय तथा योगेन्द्र शुक्ल 'सुमन' थे। इसका संचालन जितेन्द्र जितांशु ने किया। आयोजन 'अगम तिरंगा काव्य संगम' ने आयोजित किया था। इस कवि सम्मेलन की विशेषता थी बड़ी संख्या में श्रोताओं का उपस्थित होना। कविता पाठ करने वालों में सैदुर आज़र, नंदलाल रोशन, शम्भूनाथ जालान 'निराला', मुज़तर इफ्तेखारी, हीरालाल साव, भूपेन्द्र सिंह 'बसर', विश्व विजय कुमार चौबे, डॉ० संजय जायसवाल, मधु सिंह, जतिन हयाल, मीनाक्षी सांगानेरिया थे। धन्यवाद ज्ञापित किया अगम काव्य संगम तिरंगा की ओर से शम्भुनाथ जालान निराला ने। यह रपट भी उनकी ओर से सदीनामा को प्रेषित है।

# नंदन शान्तिनिकेतन द्वारा अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स में प्रदर्शनी आयोजित

कोलकाता 24/9/16 : अकादमी ऑफ फाईन आर्ट्स ने 22 से 29 सितम्बर 2016 तक चित्रकला और मूर्तियों की प्रदर्शनी रखी। यह प्रदर्शनी नन्दन शान्तिनिकेतन की तरफ से रखी गई। यहाँ शांति-निकेतन स्टाइल की चित्रकला प्रदर्शित की गई है। देश के विभिन्न जगहों से बड़े-बड़े चित्रकारों ने अपनी-अपनी चित्रें प्रदर्शित की। शांतनु भट्टाचार्य (शांतिनिकेतन), चिनमय रॉय (अगरतल्ला), रिता सरकार (जमशेदपुर), जहर दासगुप्ता (कोलकाता) इत्यादि लोगों के

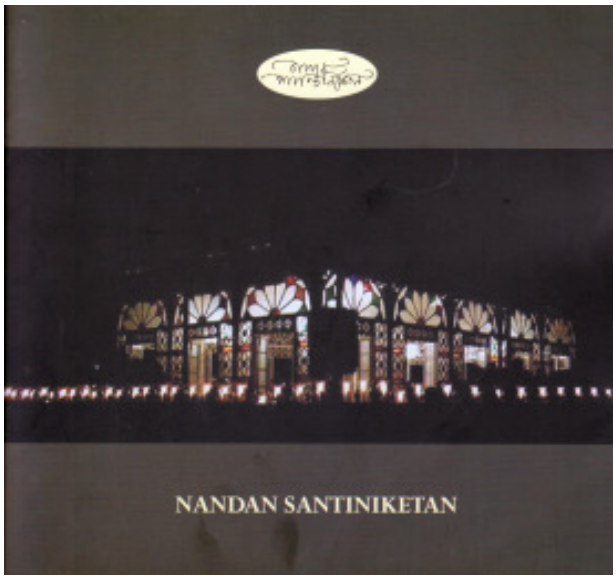


अपने-अपने स्टाइल के चित्र प्रदर्शित किए। इन चित्रों को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। लोग चित्र खरीदने के लिए भी तैयार थे। कई चित्र बिके भी। चित्रों को बिक्री 2500– 70,000 तक हुई। प्रदर्शनी के सचिव का कहना था कि वे चित्र सिर्फ बेचने के लिए नहीं बल्कि लोगों तक चित्रकला के महत्व को फैलाने के लिए यह प्रदर्शनी लगाई है। इस प्रदर्शनी में 3 दर्जन से अधिक कलाकारों की कृतियाँ थीं।

**सदीनामा को सिर्फ आप तक पहुँचा कर ही हमें संतोष नहीं, आप कोलकाता आएं**

● परीक्षा केन्द्र बनाएं ● भयंकर बीमारी की चेकिंग/इलाज ● भ्रमण : गंगासागर/सुन्दरवन ● पुस्तक का प्रकाशन ● सेमिनार का आयोजन ● कोई भी शोध कार्य। बस एक महीना पहले सम्पर्क करें।

**यह नि:शुल्क नहीं है**

हमें लिख भेजे : **मिनाक्षी सांगानेरिया**

# भौतिकतावाद के युग में धर्मसम्मत समाज

भारतीय भाषा परिषद् ने 17 सितम्बर 2016 को संध्या 4 बजे "हिन्दू, जैन, बौध धर्मों में दार्शनिक वैविध्य" विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री नंदलाल शाह और सफल संचालन प्रो. राजश्री शुक्ला ने किया। बौद्ध धर्म पर विचार करते हुए डॉ० उज्ज्वल कुमार ने कहा कि यह जीवन को दु:खमय मानकर दु:ख से मुक्ति के उपाय बताता है। हिन्दू धर्म में आत्मा और परमात्मा को उदाहरण के साथ बताते हुए प्रताप चंद रॉय ने धर्म के मूल दस लक्षणों की व्याख्या की। मंजू नाहटा ने विस्तार से जैन दर्शन को समझाते हुए उसे अनेकांतवादी, आचार प्रधान और अत्यन्त प्राचीन धर्म बताया। प्रो० स्वप्न चक्रवर्ती ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए भारतीय दर्शन और ज्ञान की गहराई का उल्लेख किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्री नन्दलाल शाह ने विषय की व्यापकता का उल्लेख किया और कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रबुद्ध श्रोताओं को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में डॉ० प्रतिभा अग्रवाल, प्रो० शंभुनाथ, श्री काशीप्रसाद खेरिया, रतन शाह, डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी, डॉ० किरन सिपानी, श्रीमती सरोजिनी शाह, श्री राज्यवर्धन, श्री रवि प्रताप सिंह, श्री योगेशराज उपाध्याय आदि भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर एक लघु पुस्तिका का प्रकाशन किया गया जिसमें तीनों धर्मों पर विश्लेषणात्मक लेख संकलित हैं। इस गंभीर विषय को दो घंटे तक श्रोता मनोयोग से सुनते रहे।

यह जानकारी **प्रो० राज्यश्री शुक्ला** ने भिजवायी।

# कैमरे के शौकीन थे पटना सिटी के अशोक सहदेव

पटना, तरह-तरह के लोग, तरह-तरह के शौक। किसी को कुत्ते-बिल्ली रखने का शौक तो किसी को घूमने-फिरने का शौक और ऐसा ही एक शौक था पटना सिटी निवासी अशोक सहदेव को जिनकी मृत्यु 29 दिसम्बर 2014 को पटना सिटी के गुरुद्वारे के पास उनके घर पर हुई। उनका शौक कैमरे का संग्रह करना था। रील की दुनिया से लेकर डिजिटल की दुनिया तक के कैमरे उनके पास थे। स्वर्गीय अशोक सहदेव की पत्नी सुमित्रा सहदेव और उनके बेटों के अनुसार उनको तस्वीरें खीचने का बहुत शौक था जिस कारण वे तरह-तरह के कैमरे का संग्रह करते रहे। इसकी एक और वजह उनका फोटोग्राफी का स्टूडियों भी था। शिवानी स्टूडियो के नाम से 40 सालों से उनका फोटोग्राफी का स्टूडियों भी चलता है। उनके परिवार के पास याशिका MS2, रॉली स्लैक (नया), याशिका 2000, याशिका 2500, याशिका 5000 के रील कैमरे से लेकर नीकोन के डिजिटल कैमरे तक उपलब्ध हैं। मैं जब उनसे मिलने गई तो उन्होंने अपने पति को बहुत याद किया और बताया कि अगर कैमरे के अच्छे दाम मिल जाते हैं तो वे इन कैमरों को बेचने वाली हैं। उनका फोन नं० है– 07764082158 ।

**रपट लिखने वाली- सुमिता मुखर्जी, प्रमुख पटना**

# गुणता आश्वासन कार्यालय–निजाम पैलेस, कोलकाता में
## हिन्दी दिवस के बहाने साम्प्रदायिकता बनाम धर्मनिरपेक्षता पर वाद-विवाद प्रतियोगिता

19, सितम्बर को गुणता आश्वासन कार्यालय में साम्प्रदायिकता बनाम धर्मनिरपेक्षता पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई, मौका था हिन्दी सप्ताह का। इस बहस में भाग लिया अहिन्दी भाषी– तुषारकांति मजूमदार, जयंत गुप्ता, सपन कुमार हलदर, रथिन टिकादार, परिमल दे तथा हिन्दी भाषी– गंधर्व लकड़ा, धीरेन्द्र कुमार, रवीन्द्र कुमार गिरि, सुनील कुमार प्रसाद, विद्या देवी ने, हिन्दी अधिकारी चन्द्रशेखर सिंह ने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। कर्मचारियों की एक बड़ी संख्या उपस्थित थी।

www.sadinama.com

# ग्रीस में पहली बार बनाया ज्यूरी सिस्टम

## एक लेखक सैलानी का यात्रा-वृतांत

*गौरया, शेर, हाथी तो अभी दिखते हैं लेकिन गूगल बाबा की दया से कई देश नक्शे से गायब हो सकते हैं हालिया उदाहरण फिलिस्तीन का है। हमने यही ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध लेखिका माला वर्मा से बात की। उनकी कई पुस्तकें हैं यात्राओं पर। इन यात्रा वृतांतों के कुछ अंश हम अपने पाठकों तक पहुँचा रहे हैं। पिछली बार पढ़ा"आइए मलयेशिया-सिंगापुर थाइलैंड चलें" से। इस बार उनकी दूसरी पुस्तक "ग्रीस और दुबई से" –* **सम्पादक**

हुकुमचन्द जूट मिल,
पोस्ट : हाजीनगर, जिला : उत्तर 24 परगना
मोबाइल : 09874115883/9007744346
E-mail : verma_mala2004@yahoo.com

**माला वर्मा**

ग्रीस ने पहली बार ज्यूरी सिस्टम बनाया तथा कानून की रक्षा के लिए कोर्ट बनाये गये जिसमें ज्यूरी रखे गये। ये ज्यूरी भी जनसमुदाय के हर क्षेत्र से लिए गए थे। ये ज्यूरी सिस्टम विश्व में पहली बार लागू हुआ था जो आज भी कई जगह प्रचलित है।

सोलोन के सुधारवादी कदमों ने एथेंस को पहले से सुखी और शांत बना दिया था लेकि उसके हटने के बाद जमींदारों व अमीरों ने सत्ता फिर से अपने हाथ में लेनी शुरू कर दी। वहाँ की गरीब जनता सोलोन के नेतृत्व में अच्छे दिन देख चुकी थी उन्होंने इस अत्याचार के खिलाफ बगावत कर दी और राज्य संचालन के लिए अपना एक नया लीडर चुना जिसका नाम पीसीस्ट्रेट्स (Pisistratus) था। यह सन् 560 ईसा पूर्व की बात है। इस तरह शासक को उन दिनों 'टाइरेंट' (Tyrant) कहा जाता था। इसका मतलब था राज्य की सर्वोच्च क्षमता उसके हाथों में सौंप देना। आजकल टाइरेंट को स्वेच्छाचारी, निरंकुश तथा अत्याचारी कहते हैं। पीसीस्ट्रेट्स ने एथेंस का राज्य संचालन बीस वर्षों तक बखूबी निभाया उसने सोलोन के सुधारवादी कदमों को जारी रखा एथेंस के वाणिज्य व्यापार की भी उन्नति करायी और वे लोग अपनी वस्तुएं बेचने के लिए और भी दूर-दराज जाने लगे। उस समय कुछ अच्छी-अच्छी इमारतें और मंदिर बने।सोने चाँदी के काम के बढ़ोतरी हुई और कई इमारतों में इनका इस्तेमाल किया गया। इस तरह बहुत जल्दी ही ग्रीस के सिटी स्टेट्स में एथेंस सबसे आगे निकल गया और बाकी सभी अपरनी समस्याओं को सुलझाने के लिए एथेंस की मदद लेने लगे, यानि पूरे ग्रीस में एथेंस को लीडर माना जाने लगा। अगर किसी राज्य ने लीडर नहीं माना तो वह था स्पार्टा। पीसीस्ट्रेट्स सन् 527 ईसा पूर्व में मर गया। इसके दो लड़के थे– दोनों अयोग्य। एक की तो हत्या हो गई और दूसरे को हटा दिया गया। अब लोगों ने अपना एक नया नेता चुना जिसका नाम क्लीसथेनस (Cleistinenmes)।

क्लीसथेनस एक राजनैतिक सुधारकर्त्ता था। इसने सोलोन के विचारों को सामने रखा और उसे आगे बढ़ाया। वह विश्व में पहला व्यक्ति था जिसने गणतंत्र यानि की 'डेमोक्रेसी' का सिस्टम चालू किया। डेमोक्रेसी एक ग्रीक शब्द है जिसका मतलब है पीपुल्स गवर्नमेंट। डेमोस यानि पीपुल्स और क्रेसी माने गवर्नमेंट। उन दिनों डेमोक्रेसी का मतलब था स्थानीय लोग अपना लीडर चुनेंगे और यदि लीडर अयोग्य हुआ तो उसे चुनाव द्वारा हटा भी सकते हैं। वोट देने का अधिकार गुलामों व स्त्रियों को नहीं था। पाँच सौ लोगों की एक सभा

कॉन्सिल चुनी जाती थी। इसी तरह सैन्य संचालन के लिए दस जेनरल चुने जाते थे। साधारण मनुष्य भी एसेम्बली की मीटिंग में जा सकता था। इस तरह एथेंस के रखरखाव में सब लोगों का योगदान रहने लगा। एथेंस पहला देश था जो डेमोक्रेसी की राह पर चला, सैकड़ों वर्षों तक चला तथा पूरे विश्व में गणतंत्र (डेमोक्रेसी) से लोगों का परिचय हुआ। आज के दिनों में गणतंत्र ही सबसे उत्तम तंत्र माना जा रहा है और जिस राज्य में गणतंत्र नहीं उसे मानसिक रूप से पिछड़ा माना जा रहा है।

ग्रीस में एक दूसरा सिटी स्टेट्स भी अपनी चर्चा में था और जिसकी बढ़ोत्तरी एथेंस से कुछ अलग किस्म की थी। उसका नाम था स्पार्टा (Sparta)। यहाँ शुरू में दो राजा एक संग हुआ करते थे। फिर उसके बाद चुने हुए मजिस्ट्रेट के हाथ में सत्ता दी गई। जिन्हें एफार्स (Ephors) कहा जाता था। इन्हें चुनने का अधिकार सिर्फ सिटी के लोगों को था – गाँव के लोग इसमें हिस्सा नहीं ले सकते थे क्योंकि उनमें ज्यादातर गुलाम बनाए हुए लोग थे। ऐसे लोगों की संख्या ज्यादा थी और इन्होंने कई बार बगावत भी की मगर उन्हें दबा दिया गया। ऐसी स्थिति से निबटने के लिए सिटी के लोगों ने अपनी सैन्य शक्ति बढ़ानी शुरू की। ये शहरवासी युद्धकला में काफी निपुण हो गए थे।

बच्चों को सात वर्ष की उम्र में ही सैनिक स्कूल में डाल दिया जाता था। जहाँ वर्षों तक उन्हें युद्ध कला सिखायी जाती थी। इस तरह की सेना को तैयार करने का उनका शुरूआती उद्देश्य तो सिटी के खिलाफ उठती डेमोक्रेसी की आवाज को रोकना था मगर बाद में यह सैन्य शक्ति उन्हें दूसरे राज्यों से लड़ने में काम आयी। जिस तरह सांस्कृतिक, व्यवसायिक व राजनैतिक आदि बातों में एथेंस ग्रीस में सबसे आगे था उसी तरह सैन्य संचालन व बहादुरी में स्पार्टा सबसे आगे था।

ग्रीस की पहली अनबन पर्सिया के राजा डेरियस (Darius) जिसे दारा भी कहा जाता था, से हुई। डेरियस और उसके पूर्वजों (साइरस, कैभबीसस) ने दक्षिण पूर्वी यूरोप तथा एशिया माइनर के पश्चिमी भू-भागों पर अपनी प्रभुता जमा रखी थी। उनकी प्रभुता से मतलब था ये पर्सियन लोग इन इलाकों को जीत तो लेते थे मगर वहाँ का राजकाज वहीं के लोगों पर छोड़ देते थे। पांचवी सदी ईसा पूर्व के प्रारंभ में ऐसे ही छोटे-मोटे राज्य पर्सिया की इस प्रभुता के खिलाफ उठ खड़े हुए। उन्होंने ग्रीक के सिटी स्टेट्स की मदद मांगी जिसमें स्पार्टा ने तो 'ना' कर दिया मगर एथेंस ने अपने कुछ जहाजी बेड़े उनकी मदद के लिए भेजा। इस लड़ाई में पर्सिया ने इस बगावत को दबा दिया मगर एथेंस के खिलाफ उनका गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने एथेंस को सबक सिखाने की सोची। एक बहुत बड़ी सेना लेकर डेरियस एथेंस पर चढ़ाई के लिए चला। ये चार सौ नब्बे ईसा पूर्व की बात है। सैन्य शक्ति में अपने को कमजोर समझ कर एथेंस ने ग्रीस के दूसरे सिटी स्टेट्स से मदद की गुहार लगायी। सबने नकार दिया यहाँ तक कि स्पार्टा ने भी। उनका कहना था पर्सिया (फारस) के इतनी बड़ी सेना के खिलाफ लड़ना आत्महत्या के समान है और हारने के बाद पर्सिया किसी को छोड़ेगा नहीं। सिर्फ एक छोटा सा सिटी स्टेट्स 'प्लेटीया' (Plataea) एथेंस की मदद को आगे आया। उसने एक हजार लोगों का एक रेजीमेंट एथेंस की मदद को भेजा। संकट की इस घड़ी में एथेंस को बड़ी राहत मिली। इस छोटी सी मदद से वह ऊर्जावान हो उठा।

इधर पर्सियन राजा डेरियस ने चालीस हजार लोगों की एक बड़ी सेना और एक बहुत विशाल समुद्री बेड़ा लेकर इजियन सी को पार करता हुआ ग्रीस के एक छोटे से शहर 'मैराथन' (Marathan) के पास पहुँचा। एथेंस के कमाण्डर मिल्टीयाडीस (Militiades) के नेतृत्व में ग्रीक सेना आगे बढ़ी। आमने-सामने की जबरदस्त लड़ाई शुरू हुई। इसी बीच मिल्टीयाडीस ने अपनी अश्व सेना के एक-एक टुकड़ी को पर्सिया के दाएं और बाएं दोनों तरफ से हमला के लिए भेज दिया। ये तरकीब काम कर गई। पर्सियन लोग अचानक इस तीन तरफे हमले से घबरा गए और उनका समुद्री बेड़ा वापस जाने लगा। एथेंस की सेना उनके सामने बहुत छोटी थी इन्हें

जीत की कोई आशा भी न थी और सच पूछा जाए तो शायद ही कोइ उस युद्ध में जीवित लौटता। इस अप्रत्याशित जीत से एथेंस की सेना इतनी खुश हुई कि उन्होंने अपने तेज धावक 'फीडीपीडिस' (Pheidipides) को तुरन्त एथेंस की ओर रवाना किया ताकि जीत की खुशी वहाँ जल्द से जल्द पहुँच जाए। इस युद्ध में हजारों की जाने गई थी। ग्रीस का नुकसान भी कुछ कम नहीं हुआ था और उनके अन्दर अब लड़ने की शक्ति भी नहीं बची थी।

फीडीपीडिस छब्बीस माइल तक लगातार दौड़ते हुए एथेंस पहुँचा। जीत की खबर शहर में पहुँचाकर वह थकान व कमजोरी से वहीं गिरकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। फीडीपीडिस की इस दौड़ को हम आज भी याद रखते हैं और मैराथन रेस हर ओलंपिक या बड़ी खेलकूद की प्रतियोगिता का एक हिस्सा हुआ करता है। इस लड़ाई में एथेंस ने अपनी इज्जत तो बचा ली मगर उन्हें हमेशा डर बना रहा कि पर्सिया और भी बड़ी सेना लेकर उन पर हमला कर सकता है। उधर पर्सिया जो अपने आप को उस क्षेत्र में अजेय समझता था इस हार के बाद कई वर्षों तक इधर का रूख नहीं किया। इस घटना के चार वर्षों बाद ही डेरियस की मृत्यु हो गई और इस हार का बदला चुकाने का जिम्मा जेरेक्सस पर आया। उसने 480 ईसा पूर्व में हजारों की सेना और बारह सौ समुद्री जहाज लेकर ग्रीस पर हमला करने चला। वहाँ थर्मोपाइली (Thermopilay) की लड़ाई में उसका मुकाबला ग्रीस की सम्मिलित सेना से हुआ। इस बार स्पार्टा ने हिस्सा लिया था और सेना का कमाण्ड स्पार्टा के राजा लियोनीडस पर था। किसी ग्रीक सिपाही ने दगाबाजी की और उसकी खुफिया जानकारी से पर्सियन सेना को आगे बढ़ने का एक शार्टकट रास्ता मिल गया, मगर वहां पर लियोनीडस ने अपनी मुट्ठीभर सेना के साथ उनका जमकर मुकाबला किया लेकिन जेरेक्सस की विशाल सेना के आगे ये टिक नहीं पाए और सभी लोग वीरगति को प्राप्त हुए। पर्सियन लोग एथेंस पहुँचे और वहाँ भारी लूटपाट व आगजनी मचायी। जिसके चलते चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच गई। **(कभी आप फिल्म 300 देखें – सं०)**

पर्सिया से संभावित हमले के खतरे को ग्रीस भूल नहीं पा रहा था। पर्सिया के खिलाफ ग्रीस के सारे सिटी स्टेट्स ने मिलकर एक संघ बनाया जिसे 'डेलियन' (Delian) लोग कहा जाता है। इसमें इजीयन सी के बहुत से टापुओं ने भी हिस्सा लिया। ये सभी चंदा इकट्ठा कर अपने सैन्य वाहिनी और समुद्री बेड़ा मजबूत करते रहें। एथेंस इसमें अग्रणी रहा मगर स्पार्टा ने इसमें हिस्सा नहीं लिया था। स्पार्टा की सैन्य शक्ति इतनी मजबूत थी कि उसने इसकी जरूरत नहीं समझी। इस डेलियन लोग का कमान्डर मैराथन युद्ध के कमान्डर मिल्टीयाडीस का पुत्र सीमोन था। सीमोन के नेतृत्व में पर्सिया से कुछ छिटपुट लड़ाइयाँ हुईं जिसमें ग्रीस की विजय हुई। सीमोन ने इस लीग को और भी मजबूत करने के लिए अन्दर ही अन्दर स्पार्टा को मनाना शुरू किया जिसे स्पार्टा ने ठुकरा दिया। इस बात का खुलासा होने पर एथेंसवासी उससे गुस्सा हो गये और उसे उसके पद से हटा दिया गया। एथेंस के लोग तो स्पार्टा से पहले ही नाराज थे क्योंकि उसने मैराथन युद्ध के समय मदद से इन्कार किया था।

सीमोन के हटने के बाद एथेंस का मुखिया पेरीक्लीज (Pericles) बना जो आगे चलकर ग्रीस के इतिहास में एक बहुत प्रभावशाली व्यक्ति हुआ। पेरीक्लीज पन्द्रह वर्ष तक लगातार निर्वासित होकर अपने पद पर आता रहा। डेमोक्रेसी की भावना उसमें कूट-कूट कर भरी थी। वह बहुत ईमानदार आदमी था और उन दिनों के प्रचलित रिश्वतखोरी से बहुत दूर था। पेरीक्लीज के समय एथेंस में शान्ति सुव्यवस्था बनी रही और सभी सिटी स्टेट्स ने उसी तर्ज पर अपने को ढालना शुरू किया। बाहरी देशों के लिए एथेंस को ही ग्रीस का मुखिया का रोल मिला। डेलियन लोग पर एथेंस हावी रहा और असहयोगिता करने वाले सिटी स्टेट्स से कड़ाई व कभी-कभी सैन्य ताकत से चन्दा वसूलने का कार्य एथेंस करता रहा। इस तरह धीरे-

धीरे कुछ ऐसा माहौल बन गया मानो सारे शहर एथेंस के कब्जे में हो और चंदा के नाम पर एथेंस को टैक्स दे रहे हों। इस बात पर कुछ स्टेट्स नाराज भी हुए लेकिन एथेंस ने पूरे इलाके में शान्ति सुव्यवस्था बनाए रखी थी और वाणिज्य व्यापार भी अपने तरक्की पर था। एथेंस में कुछ खेलकूद व समारोह हुआ करते थे जिसमें सभी सिटी स्टेट्स आते और प्रतियोगी बनके हिस्सा लेते।

इस बीच पेरीक्लीज और उसके सहकर्मी यहाँ के डेमोक्रेसी को और भी साफ-सुथरा बनाने में लगे थे। भ्रष्ट लोगों को पदों से हटाया जा रहा था। छोटे-छोटे किसान, कारीगर या व्यवसायी भी चुने जाने पर सरकार का हिस्सा बन सकते थे, तो वही एसेंबली में कोई भी जाकर अपनी समस्या रख सकता था।

एथेंस का अमन चैन व वैभव अपने सही जगह पर था मगर उसके मातहत राज्यों, जिन्हें प्रजा भी कह सकते हैं कि हालत उतनी ठीक नहीं थी। वे लीग का सलाना चंदा देने में भी असमर्थ थे। डेमोक्रेसी वाली बात हर स्टेट्स में ठीक तरह से लागू नहीं हो पा रही था। अत: अन्दर ही अन्दर वे सभी एथेंस से दूर होते जा रहे थे। यही वजह है बाद में जब एथेंस व स्पार्टा के बीच युद्ध हुआ तब इन राज्यो ने एथेंस की मदद नहीं की थी। सन् 429 ईसा पूर्व एथेंस में प्लेग का भयंकर प्रकोप हुआ। जिसमें हजारों लोग मारे गये थे और इनमें एक पेरीक्लीज भी था। इस तरह पेरीक्लीज के तीस वर्ष के शासनकाल का अन्त हुआ।

पेरीक्लीज मरने से पहले अपना कार्य कर चुका था। जेरेक्सस द्वारा विध्वंस के बाद एथेंस को फिर से बनाया गया – पहले से और ज्यादा भव्य व शानदार। एक्रोपोलिस पर देवी एथीना का मंदिर 'पार्थेनन' बना और उस पहाड़ी के एक ढलान पर बहुत बड़ा एक ओपन थियेटर डायोनीसस बनाया गया। जिसका अधिकांश अंश अभी भी खंडहर के रूप में मौजूद है। (और.... जिसका दर्शन हमने थोड़ी देर पहले ही किया था।)

# बांग्लादेशी पुस्तक मेला सम्पन्न

कोलकाता, 10/9/16 : रवीन्द्र सदन के नंदन प्रांगण में 10 सितम्बर को बांग्लादेशी बुक फेयर का आयोजन किया गया। इस बुक फेयर में लगभग 50 बुक स्टॉल थे जिनमें बांग्लादेशी लेखकों के किताबें पाठकों के लिए रखी हुई थीं। लगभग 6 सालों से चले आ रहे इस बुक फेयर के प्रत्येक स्टॉल में लगभग 550-1000 किताबें पाठकों के लिए उपलब्ध थीं। स्टॉल नं॰ 21, जातीय साहित्य प्रकाश पब्लिकेशन के विक्रेता कमलकांत जो ढाका के निवासी हैं, के अनुसार साल में 2 बार यह बुक फेयर लगाया जाता है। यह बुकफेयर कोलकाता अंतर्राष्ट्रीय बुक फेयर में भी लगाया जाता है। नवयुग पब्लिकेशन, अनुपम पब्लिकेशन, अंकुर पब्लिकेशन, अनन्या पब्लिकेशन, प्रतिभा प्रकाश पब्लिकेशन इत्यादि के विभिन्न विषयों की किताबें रखी हुई थीं। यहाँ पाठकों के लिए इतिहास, अर्थशास्त्र, गणित, काव्य, कविताओं की किताब इत्यादि उपलब्ध थीं। यहाँ स्टॉल लगाने के लिए प्रत्येक स्टॉल के मालिक को नंदन के अधिकारी को 10,000 रुपये देने पड़े। यह पूछे जाने पर किया क्या वे नंदन द्वारा प्रदान किए गए सहयोगिता से खुश हैं? तो उनका कहना था कि वे बेहद खुश हैं। जितनी बार भी वे यहाँ स्टॉल लगाने के इच्छुक थे उतनी बार ही नंदन ने उनकी यथासंभव सहायता की। नंदन के पास जब भी डेट्स्ट होते तभी वे इस बांग्लादेशी बुक फेयर को अपने यहाँ स्टॉल लगाने की अनुमति देते हैं।

शाम के समय इस बुक फेयर की रौनक देखते ही बनती है। बुक लवर्स अपने पसंदीदा विषयों की किताबें खरीदने के लिए विभिन्न स्टॉल का जायजा लेते हैं। विक्रेता के अनुसार 50 वर्ष के आयु के लोग इस बुक फेयर में अपनी रूचि दिखा रहे हैं।

**–सुमिता मुखर्जी**

# अनिला सिंह चांडक की दो कविताएँ

(एक)

## लड़कियाँ

वह उड़ानों के देश की थीं
पर पँख नहीं थे उनके
शायद तराशने का भ्रम देकर
काट दिए होंगे किसी ने
या फिर घर की रोशनी के
लिए जला डाले होंगे।
फिर भी उड़ना चाहती थीं
वह हौसलों के पँखों से
अँधेरे आसमानों में रोशनी के लिए
कि शायद जल कर गिरेगी
उनके हसीन सपनों की राख
बिखरेगी उपजाऊ ज़मीन में
तब बंजर ज़मीन पर
खिलेंगे सुन्दर ख़्वाब फूलों से
महकाएँगे बदबूदार आत्माएँ
वह मिट कर करना चाहती थीं
रोशन ज़मीन-आसमां...
आज कायनात के अख़बार में
छपा है कि उनके
पँखों को नहीं जिस्मों को ही जलाया जा रहा है
कुल की रोशनी के लिए
उनके जिस्म के ख़ून से भरे जा
रहे हैं अनगिनत दीपक
वह मर कर भी कर रही हैं
अन्धेरों को रोशन
वह शायद लड़किया हैं
बस इसलिए!

**संग्रह :**
**वक़्त की उँगलियों के निशान**

(दो)

## ज़मीन

मत उखाड़ना
दिल की ज़मीन में उगे
मुहब्बतों के पेड़
सुना था दिल कू मासूम मिट्टी में
उगता है एक ही बार
मुहब्बत का पेड़
अपनी पूर्णता के साथ।

तुमने मिट्टी ही उखाड़ दी
उम्मीद कायम है
बिखरी फूल और पत्तियाँ
किसी और जहाँ से लौटेंगी
फिर पनप उठेगी मिट्टी
आबाद होगा वहीं फिर एक और जहान
जहाँ से शुरू हुआ था मुहब्बतों का सफ़र।

मुहब्बतों के सफ़र में
फ़ना होकर भी नहीं मरता कोई
लौट-लौट आता है फिर से
खोया हुआ जहान
पनपने फिर से एक बार
दिल की ज़मीन पर...
मुहब्बतों की मिट्टी बड़ी ज़रखेज़ हुआ करती है।

**–अनिला सिंह चाड़क**
सम्पर्क : 01912468718 / 09086102679

**इसका लोकार्पण विगत माह कोलकाता में हुआ**
**– संपादक**

# नईं पुस्तकें

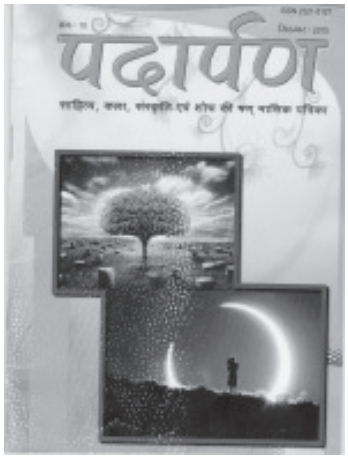
पदार्पण

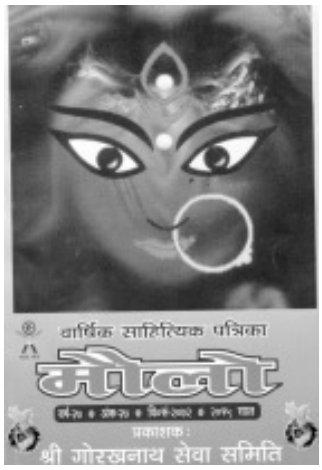
वार्षिक साहित्यिक पत्रिका
मौन्नी
प्रकाशक :
श्री गोरखनाथ सेवा समिति

पैरोकार

लहक
लोक के मुग्धीटे में कविता का फर्जीवाड़ा
नेहरू एक सफल राजनीतिज्ञ नहीं थे : श्याम बेनेगल
अब शिवमूर्ति के लघु उपन्यास 'कुच्ची का कानून' में 'मनुस्मृति' का महा-दर्शन !

कलकत्तामा सृजनाका फूलहरू
गणेश कुमार प्रधान

नेपाली संगम

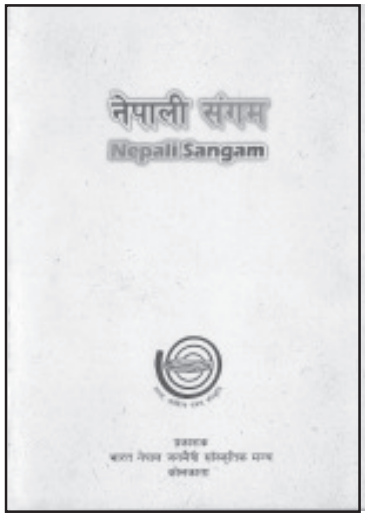
नेपाली संगम
Nepali Sangam

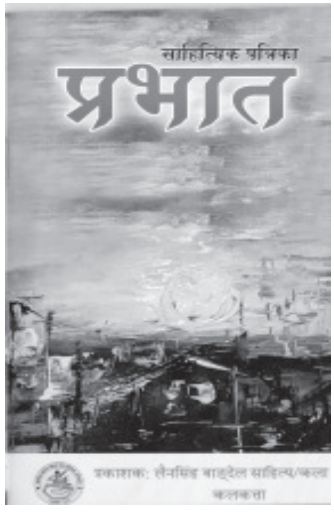
साहित्यिक पत्रिका
प्रभात

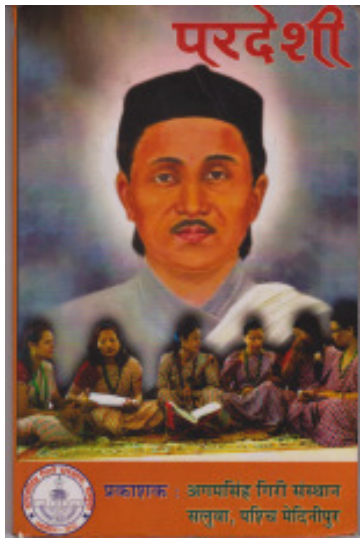
परदेशी
प्रकाशक : अगमसिंह गिरी संस्थान
सालुवा, पश्चिम मेदिनीपुर

www.sadinama.com

# आनुवंशिक रूप से परिवर्तित जीवाणुओं की कहानी

● विशिष्ट वैज्ञानिक डॉ० शर्मिला चट्टोपाध्याय
Dr. Shrmila Chattopadhayay, IICB, Kokata

आनुवंशिक रूप से आशोधित जीवाणु (जीएमओ) वह जीवाणु है जिसका आनुवंशिक पदार्थ आनुवंशिक इंजीनियरिंग तकनीक का प्रयोग करते हुए बदल दिया गया है। सामान्यत: रिकॉम्बिनैन्ट डीएनए तकनीक के रूप में ज्ञात इस तकनीक में विभिन्न स्त्रोतों से डीएनए अणुओं का प्रयोग किया जाता है, जो एक अणु में जुड़ जाते हैं और जीनों के एक नए सेट के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। इसके बाद इस डीएनए को एक जीवाणु में अंतरित कर दिया जाता है, जो आशोधित या नए जीन के रूप में जाने जाते हैं।

Let Science Lead

After more than a decade of GM drought, a mustard variety rises

In a significant step, a technical sub-committee of t Engineering Appraisal Committee has concluded that modified variety of mustard named Dhara Mustar safe for human consumption, animal feed and the This strain has been developed by a team of sci University. It uses a system of genes from commo bacteria that makes mustard better suited to hyb the final clearance, DMH-11 would be the first G fields. As of now, the environment ministry h report of DMH-11 public for scrutiny and cor

The history of GM crops in India has bee of this has been because of politics rather t had cleared Bt brinjal. But its commercial by then e Ramesh civil s sectio that wi s

cotton's introduction pricing and intellectu

However, there's science of GM crop be safe, sustainab field trials across Germany, four 22% and redu of GM mus tonnes of s

Adopt agricul much- polit for; ch f

पिछले कुछ दशकों में व्यवहारिक एवं बुनियादी अनुसंधान की दृष्टि से पौधे काफी महत्वपूर्ण बन प्रौद्योगिकी में विकास के में बाहरी जीन को टिकाऊ सका है, जिसे ट्रांसजेनिक फसलों में सुधार से संबंधित समाधान किया गया है। यह करने, बेहतर गुणवत्ता तथा जैविक या अजैविक दवावों की प्रतिरोध क्षमता में वृद्धि करने में काफी लाभदायक रही है। आज की तारीख तक स्व-निर्मित आनुवंशिकीय दृष्टि से आशोधित पौधों को प्राप्त करने में इलेक्ट्रोपोरेशन, बायोलिस्टिक जैसी विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करते हुए आनुवंशिक आशोधन का काफी अध्ययन किया गया है। इनमें *एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसियन* सर्वाधिक कम लागत वाली टिकाऊ तरीका के रूप में सामने आया है जिससे आनुवंशिक रूप से आशोधित पौधों को उगाया जा सकता है।

### *एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसियन*

ट्रांसजेनिक पौधों को पैदा करने हेतु अनेक पद्धतियों का विकास किया गया और उन्हें लागू किया गया। सीधी जीन अंतरण पद्धति काफी प्रसिद्ध हुई, खासकल मोनोकोटिलेडेनस पौधों के मामले में इनके अतिरिक्त कुछ रूपांतरण पद्धतियाँ एग्रोबैक्टिरियम का उपयोग करने पर आधारित हैं, जो डिकोटिलेडेनस पधों का पैथोजेन हैं, जो पौधा जेनोम में जीनों को अंतरित कर देता है।

*एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसिन* जमीन से उत्पन्न होने वाला एक ग्रेम-निगेटिव बैक्टेरियम है जो पौधा जीवविज्ञानियों के साथ-साथ जैवप्रौद्योगीकियों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है। एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसियन 'क्राउन गॉल' रोग का कारक एजेंट है, जो आर्थिक दृष्टि से अनेक पौधों का महत्वपूर्ण रोग है, खासकर द्विबीजपत्री पौधों की लगभग 140 प्रजातियों में यह पाया जाता है। क्राउन गॉल (ट्यूमर उतक की वृद्धि) की योग्यता इंटर किंगडम जीन अंतरण की एक उल्लेखनीय

विशेषता पादप जेनोम में बैक्टेरियल जीन के अंतरण में एग्रोबैक्टिरियम प्रजातियों की योग्यता पर निर्भर करती है। जंगली प्रकार का एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसिन में ट्यूमर उत्प्रेरक (टीआई) प्लाज्मिड होता है, जो टी-डीएनए के रूप में ज्ञात इसके डीएनए के एक अंस को इसके परिपोषक पौधे (होस्ट) की कोशिका में क्रोमोजोमल डीएनए में एकीकृत कर देता है। इस प्लास्मिड (टी-डीएनए क्षेत्र) का एक अंश वस्तुत: बैक्टेरियम से अंतरित होकर पौधा की कोशिका में चला जाता है जहाँ वह परिपोषक पौधे के जेनोम में एकीकृत हो जाता है। टी-डीएनए प्लास्मिड इनडोल-3 एसेटिक अम्ल तथा साइटोकिनिन के लिए जीनों को खोलता है, जिससे पौधों में क्राउन गॉल का निर्माण होता है। टी-डीएनए में वे जीन होते हैं जो एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसियन के मेटाबोलिज्म के लिए आवश्यक एमिनो अम्लों के समूह ओपाइन को संश्लेषित करते है। एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसियन सी-58 संक्रमित पौधे द्वारा उत्पन्न विशेष ओपाइन है नोपालाइन। एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसियन में क्लोनिंग करने हेतु टीआई प्लास्मिड को संशोधित किया गया है ताकि द्विधात्विक कारक निर्मित हो सके, जो इ.कोलि तथा एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसियन दोनों में पुनरावृत्ति करने में समक्षम होता है। क्राउन गॉल का निर्माण एग्रोबैक्टिरियम ट्यूमेफेसियन में प्लास्मिड की उपस्थिति पर निर्भर करता है, जिसे ट्यूमर उत्प्रेरक प्लास्मिड कहा जाता है। इस विशेषता का लाभ उठाते हुए पादप जीवविज्ञानियों ने पौधा जेनोम में अपनी रुचि के अंतरण की पद्धति विकसित की है।


GM mustard safe for human consumption: Govt panel

Seeks Public Opinion On The Report

Vishwa Mohan & Dipak Kumar Dash | TNN

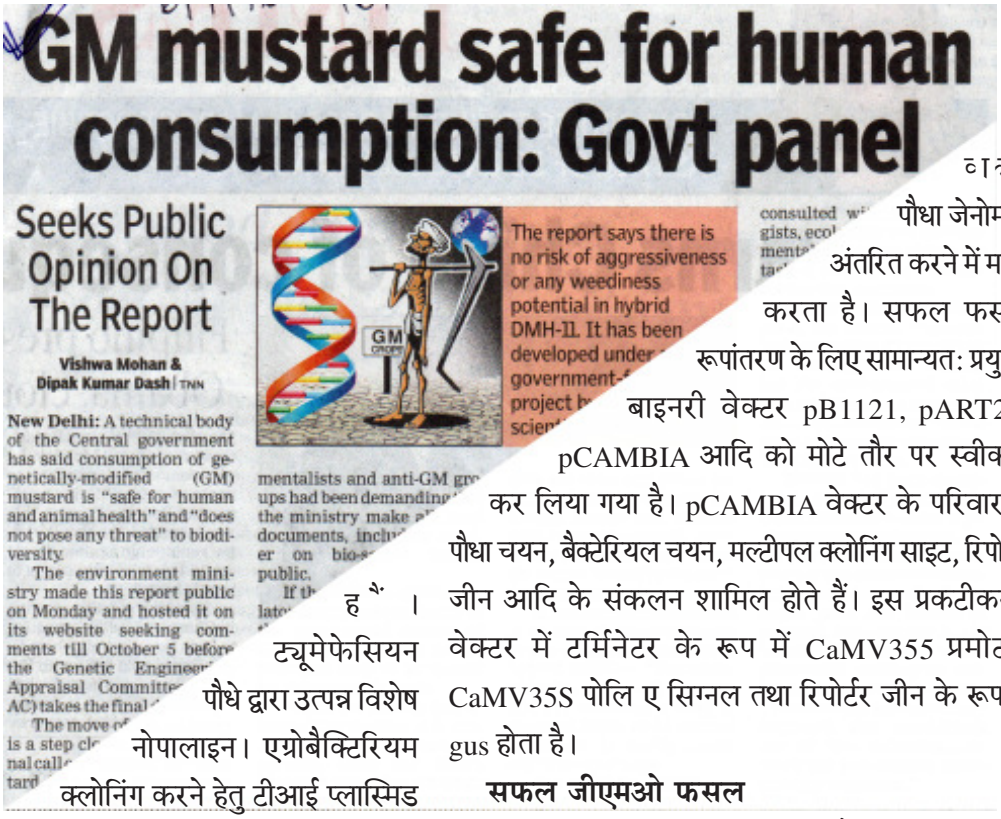

New Delhi: A technical body of the Central government has said consumption of genetically-modified (GM) mustard is "safe for human and animal health" and "does not pose any threat" to biodiversity.

The environment ministry made this report public on Monday and hosted it on its website seeking comments till October 5 before the Genetic Engineer... Appraisal Committe... AC) takes the final ...

The move ... is a step cl... nal call... tard...

...mentalists and anti-GM groups had been demanding ... the ministry make ... documents, inclu... er on bio-... public.

If th... late...

The report says there is no risk of aggressiveness or any weediness potential in hybrid DMH-11. It has been developed under ... government-... project ... scien...

consulted w... gists, ecol... ment... ta...

पौधा रूपान्तरण के लिए बाइनरी वेक्टर, जिसे मानक प्रयोगशाला वेक्टर, एस्चोरिचिया कोलि तथा एग्रोबैक्टेरियम दोनों में रखा जा सकता है, इनमें दो वेक्टर होते हैं, एक में वीर जीन होता है तथा दूसरे में अंतरण डीएनए (टी-डीएनए) होता है। बाइनरी वेक्टर के वीर जीन में अंतरण उपकरण होता है, जो *एग्रोबैक्टेरियम* संक्रमण के बाद टी-डीएनए क्षेत्र वाले पौधा जेनोम में अंतरित करने में मदद करता है। सफल फसल रूपांतरण के लिए सामान्यत: प्रयुक्त बाइनरी वेक्टर pB1121, pART27, pCAMBIA आदि को मोटे तौर पर स्वीकार कर लिया गया है। pCAMBIA वेक्टर के परिवार में पौधा चयन, बैक्टेरियल चयन, मल्टीपल क्लोनिंग साइट, रिपोर्टर जीन आदि के संकलन शामिल होते हैं। इस प्रकटीकरण वेक्टर में टर्मिनेटर के रूप में CaMV355 प्रमोटर, CaMV35S पोलि ए सिग्नल तथा रिपोर्टर जीन के रूप में gus होता है।

### सफल जीएमओ फसल

पिछले कुछ दशकों में ट्रांसजेनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। जैव प्रौद्योगिकी में तंबाकू प्राय: नई प्रक्रिया की जाँच के लिए तथा विशेष जीनों के कार्य की खोज के लिए मोडल के रूप में प्रयोग किया जाता है। पूरे संसार के

सैकड़ों प्रयोगशालाओं में बुनियादी अनुसंधान के अतिरिक्त खेतों में भी जीएम तंबाकू पर अनेक परीक्षण किए गए। हाल ही किए गए सांख्यिकीय अध्ययन के अनुसार यूरोप के खेतों में लगभग 60 परीक्षण तथा यूएसए के खेतों में लगभग 374 परीक्षण किए गए हैं। खेतों में किए गए परीक्षणों में परवर्तित तत्व (निकोटीन तत्व, आणविक खेती), हर्बीसाइड सहनशीलता नेमाटोड एवं संक्रामकों के प्रति प्रतिरोध, नर नपुंसकता तथा बुनियादी अनुसंधान आदि प्रमुख्य हैं, जो ट्रांसजेनिक तंबाकू के पौधों में विद्यमान होते हैं। आज की तारीख तक उपलब्ध ट्रांसजेनिक पौधों के विकास के लिए जरूरी चीजें निम्नलिखित हैं:

| | |
|---|---|
| पोषक का महत्व | – सुनहला धान |
| लंबे समय तक रखने की क्षमता | – विशिष्ट गंधयुक्त टमाटर |
| हर्बीसाइड प्रतिरोधक | – केनोला, मकई |
| कीट प्रतिरोधक | – बीटी कपास, बीटी बैगन |
| अजैविक दबाव प्रतिरोधक | – अनावृष्टि प्रतिरोध |

अमेरिका में व्यावसायिक उत्पादन के लिए प्रथम आनुवंशिक निर्मित फसल था स्वादयुक्त टमाटर, जिसे 1994 में जारी किया गया। एंजाइम पोलिगैलेक्टोरोनेस (पीजी) के जीन इनकोडिंग के लिए एंटीसेंस प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया, जिसने टमाटर की कोशिका दीवाल में पेक्टिन के अवक्रमण को रोकने में सफलता दिलाई, जिससे फल को गलने से रोका तथा उसकी जीवन अवधि को बढ़ाया।

इस समय अमेरिका में निम्नलिखित जीएमओ फसल व्यापक रूप से दैनन्दिन जीवन में प्रयोग किए जा रहे हैं–

- 75 प्रतिशत कपास की फसल
- 50 प्रतिशत सोयाबीन की फसल
- 20 प्रतिशत मक्के की फसल
- अन्य फसल (केनोला, चेरी टमाटर, स्क्वैश, शकरकंद, आलू)

अमेरिका में किसी न किसी प्रकार से प्रयुक्त और बाजार में उपलब्ध जीएमओ फसल निम्नलिखित हैं–

- केलॉग कॉर्नफ्लेक्स
- हींज बेबी सिरियल
- नेस्ले कारनेशन इनफैंट फॉर्मूला
- क्वैकर चेवी ग्रेनोला बार्स
- अल्ट्रा स्लिम फास्ट
- आंट जेमिका पैनकेक मिक्स
- एल्पो ड्राई पेट फुड
- मैकडोनाल्ड मैकवेगी बर्जर
- ओल्ड एलपासो टैको शेल्स

इनके अतिरिक्त अन्य उल्लेखनीय अध्ययन **सुनलहे धान** के विकास के रूप में किया गया है। विटामिन ए की कमी (वीएडी) पूरे विश्व स्तर पर उल्लेखनीय समस्या मानी जा रही है। यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रेन फंड (यूनिसेफ) के अनुसार "विटामिन ए की कमी विकासशील देशों के पाँच वर्ष से कम के लगभग 40 प्रतिशत बच्चों की रक्षात्मक पद्धति को नुकसान पहुँचा रही है और प्रत्येक वर्ष लगभग एक लाख शिशुओ की मृत्यु हो रही है।" विटामिन ए की कमी (वीएडी) एक बड़ी समस्या उन क्षेत्रों में है जहाँ भात के माँड़ को पोषक खाद्य के रूप में माना जाता है। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण उन देशों में है जो संसार के गरीबतम देश हैं, जिनमें दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के देश भी शामिल हैं, जहाँ भात मुख्य भोजन है। धान की फसल पैदा करने वाले कोई भी किसान विटामिनयुक्त इंडोस्पर्म को पैदा नहीं करता, जो सहयोगी प्रौद्योगिकी से होता है। बल्कि पारंपरिक प्रजनन की आवश्यकता है। इन सभी तथ्यों पर विचार करते हुए इटीएच, ज्यूरिख, स्वीटजरलैंड के प्रो. इंगो पोट्रीकस के समूह ने सुनहले धान का विकास किया जिसमें जीन अंतरण प्रौद्योगिकी के माध्यम से बी-कोरीटीन पाथवे जीनों को शामिल किया गया है ताकि बी-केरोटीन में ए विटामिन ए प्रिकर्सर से समृद्ध ट्रांसजेनिक धान

प्राप्त किया जा सके।

भारत में प्रारम्भ की गई और भारत सरकार द्वारा स्वीकृत प्रथम जीएम खाद्य फसल थी बीटी बैगन, जिसमें सीआरवआई1 एसी जीन है, जो बी. थूरींगजिन्सिस से प्राप्त किया गया है और जिसका वाणिज्यीकरण 14 अक्टूबर, 2009 को किया गया। **बैसिलस थूरींगजिन्सिस** (या बीटी) ग्रेन-पोजिटिव है, जो मिट्टी में होने वाला बैक्टेरियम है, जिसका सामान्यत: उपयोग पेस्टीसाइड के लिए जैविक विकल्प के लिए किया जाता है। बीजाणुजनन के दौरान अनेक बीटी स्ट्रेन क्रिस्टिल प्रोटीन पैदा करते हैं जिसे एंडोटॉक्सिन कहा जाता है, जो कीटाणुओं को मारने में कार्यकर होता है। इसीलिए आजकल इनका उपयोग कीटनाशक के रूप में किया जाता है और अभी हाल में बीटी जीन का उपयोग करते हुए आनुवंशिकी संशोधित फसल के लिए किया जा रहा है। बीटी बैगन का उत्पादन मोनसैंटो (अमेरिका में बहुराष्ट्रीय कम्पनी) तथा भारत की मेहिको (महाराष्ट्र हाईब्रिड सीड कम्पनी) के सहयोग से किया जा रहा है, जो लेपिडेप्टेरोन कीटाणुओं जैसे फल या कोंपल में छेद करने वाले कीटाणु (ल्यूसिनोड ऑरबोनेलिस) आदि के प्रति प्रतिरोधक हैं।

# एक फोन बेरमों से दामोदरघाटी निगम

अगस्त 16 में सदीनामा में एक खबर छपी थी कि DVC

Mamata threatens to take legal action against DVC

TIMES NEWS NETWORK

Kolkata: Mamata Banerjee lashed out at DVC authorities on Tuesday after her meeting in North Dinajpur's Chopra, as several parts of south Bengal were flooded following release of water by DVC. Terming it a "man-made flood", Banerjee said the Bengal government would take legal action against DVC for releasing water without prior intimation.

Flood situation worsened in Howrah's Udaynarayanpur on Tuesday

ने अपनी वेबसाइट लांच की है जिसमें पानी कब छोड़ा जायेगा इसकी सूचना दी जायेगी। DVC के प्रभावित क्षेत्रों में सदीनामा के पाठकों को इसका लाभ मिला है। अब पश्चिम बंगाल सरकार वेबसाइट देखे तब ना। हमें एक फोन बेरमों से आया था कि इस खबर से वे बहुत खुश हैं।

विज्ञापन

## सोच के इजाफे की पत्रिका
## मुश्किल हो रहा है इतनी प्रतियां छापना
## सोलह वर्ष तक नियमित आप तक पहुँचाने का अनवरत काम

यह पत्रिका विज्ञापन विहीन पत्रिका लग रही होगी। असल में हमें विज्ञापन नहीं मिलते। इसका कारण हमारी कोई विज्ञापन नीति नहीं। कुछ विज्ञापन आ भी जाते हैं। हम जब भी विज्ञापन की परख/सत्यता की बात करते हैं, हमें विज्ञापन नहीं मिलते। दिक्कत ये आ रही है कि सदस्यों को नियमित भेजते समय जितनी कापियाँ भेजनी पड़ रही है उतने की पूंजी में दिक्कत आ रही है अतएव हम अपनी हाल सुधार के लिए अगले एक वर्ष तक नई सदस्यता बंद कर रहे हैं।

क्षमा सहित

जितेन्द्र जितांशु

जितेन्द्र जितांशु
सम्पादक : सदीनामा

www.sadinama.com

# दिल जीतने की कला

● इन्दर कुमार अचप्लानी

अपने सपनों को पूरा करने के लिए यह नितांत आवश्यक है कि लोग आपकी बात सुनें, आप पर विश्वास करें और आप उन्हें अपने विचारों से प्रभावित कर सकें अर्थात उनका दिल जीत सकें। आपकी अंतिम मंजिल वह लक्ष्य है जो आपने अपने लिए चुना है और उस तक पहुँचने के लिए आपको ना जाने कितने लोगों को विश्वास में लेना होगा और अपनी मंजिल तक के रास्ते में बहुत से लोगों से दोस्ताना संबंध बनाने होंगे ताकि वह लोग आपके रास्ते की बाधा बनने के बजाय आपके मददगार बन सकें।

आप अपनी बुद्धिमानी और तकनीकी कौशल से जटिलतम मशीनों को तो आसानी से संचालित कर सकते हैं क्योंकि उन्हें चलाने के लिए एक तर्कसंगत तरीका होता है और अगर आप उसे जानते हैं तो आप राकेट को भी पृथ्वी के पास ले जाकर वापिस भी सही-सलामत ला सकते हैं. परन्तु जब आपका वास्ता लोगों से पड़ता है तो आप पाते हैं कि उन्हें संभालने के लिए कुछ अलग ही विधा और कौशल चाहिए क्योंकि यहाँ सिर्फ तर्क से काम नहीं चल सकता। पंजाबी की एक कहावत है "रा पये जानिये या वा पये जानिये" अर्थात् जब आप किसी रास्ते पर जाते हैं तो पता चलता है कि रास्ता कैसा है और जब आपका किसी व्यक्ति से वास्ता पड़ता है तो आप जान पाते हैं कि उसका व्यवहार कैसा है।

हर व्यक्ति की अपनी भावनाएं हैं, मान्यताएं हैं, पूर्वाग्रह हैं और उस सबसे ऊपर यह कि व्यक्ति अपने आत्म-सम्मान और मिजाज से बेहद प्रभावित होते हैं। अर्थात् हर व्यक्ति अपने आपको महत्वपूर्ण समझता है और कभी-कभी तो अपनी महत्ता सिद्ध करने के लिए कुछ लोग पागलपन की हद तक जा सकते हैं। व्यक्ति की यही कमजोरी आपके लिए वरदान सिद्ध हो सकती है यदि आप वार्तालाप की शुरूआत उसकी ईमानदार प्रशंसा से करते हैं अर्थात उसके महत्व को स्वीकारते हैं। अगर आप चाहते हैं कि लोग आप में रूचि लें, आपकी बात सुनें तो निम्न बातों को सदैव ध्यान में रखें:–

1. वार्तालाप के दौरान चेहरे पर सदैव मुस्कान रखें।

2. दूसरों में सही मायने में रुचि लें।

3. हमेशा याद रखें कि किसी को भी अपना नाम बहुत प्यारा होता है उसको उसके प्रथम नाम से संबोधित करें।

4. अच्छे श्रोता बनें और दूसरों को अपने बारे में बोलने का मौका दें।

5. श्रोता की रुचियों का ध्यान रखते हुए वार्तालाप की शुरुआत करें।

6. उन्हें यह अहसास करायें कि वह आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

दोस्त बनाना बहुत ही आसान है और हो सकता है कि आप दो माह में ही बहुत से दोस्त बना लें अगर आप उपरोक्त बातों का ध्यान रखें और उनमें रुचि लें जिनसे आप दोस्ती करना चाहते हैं, परन्तु यह भी हो सकता है कि आप दो वर्षों में भी एक भी दोस्त ना बना पाये अगर आप यह चाहें कि दूसरे आप में रुचि लें।

मान लीजिए कि कहीं कोई व्यक्ति दूसरे की किसी बात पर आलोचना कर उसे आहत कर रहा है तब आप सिर्फ इतना भर कहकर स्थिति को संभालने की कोशिश करते हैं कि अगर आप दूसरे व्यक्ति की जगह होते तो शायद परिस्थिति में वही करते जो उसने किया। आपकी इतनी सी बात दूसरे व्यक्ति के लिए ऐसे चुम्बक का काम करेगी कि वह आपसे जिन्दगी भर के लिए जुड़ जाएगा। जानते हैं क्यों ? क्योंकि आपने उसकी महत्ता को स्वीकारा और उसके दिल में अपने लिए जगह बना ली।

किसी का भी दिल जीतना एक कला है और कौशल भी किसी भी विधा में पारंगत होने के लिए उसको सीखने के सार्थक प्रयास की आवश्यकता होती है और अगर आप निम्न बिन्दुओं पर ईमानदारी से विचार करें और उनका अनुसरण करें तो आपका व्यक्तित्व निखर जायेगा और लोग आपसे दोस्ती करने को तरसेंगे:

**1. बाडी-लैंगवेज का सदैव ध्यान रखें:**

क्या आप जानते हैं कि जब आप किसी से बातचीत में मशगूल होते हैं तो आपके कहे शब्दों से जो संचार होता है उसका प्रभाव केवल 07 प्रतिशत होता है अर्थात आपसी बातचीत में 93 प्रतिशत संचार या तो आपके हाव-भाव से होता है जिसकी मात्रा लगभग 55 प्रतिशत होती है अथवा आपके बातचीत के सुर और लहजे से जिसकी मात्रा लगभग 38 प्रतिशत होती है। विडम्बना देखिये, फिर भी हम अपना ध्यान अपनी भाषा और व्याकरण सीखने पर ज्यादा लगाते हैं और कई बार तो सही शब्दों के चयन में अटके रहते हैं। अब आप ही तय कीजिए कि आप दूसरों का दिल जीतने निकले हैं तो बातचीत के दौरान किस पर सबसे ज्यादा ध्यान देंगे। अत: संवाद के दौरान निम्न का सदैव ध्यान रखें:

- यथा संभव श्रोता से आँख मिलाकर बात करें।
- विषय के अनुसार चेहरे पर मुस्कान, संजीदगी अथवा गंभीर भाव रखें।
- बाजुओं को अनावश्यक ही जोड़ कर बातचीत ना करें।
- बातचीत के दौरान व्यर्थ ही हाथ-पैर ना हिलाते रहें।
- आपके खड़े होने अथवा बैठने की मुद्रा भी बहुत कुछ बयान कर देती है, कृपया स्थिति के अनुसार अपनी शारीरिक मुद्रा का भी ध्यान रखें।

इसी प्रकार वार्तालाप के दौरान अपनी आवाज के सुर और लहजे का भी ध्यान रखें। स्थिति के अनुसार सुर में बदलाव ना सिर्फ आपके संचार को स्पष्टता देता है बल्कि आपके मनोभावों को भी कम से कम शब्दों में व्यक्त करने की ताकत भी इसी से मिलती है और श्रोता तक आपका संदेश आपके भावों के साथ संप्रेषित हो जाता है।

क्या आपने कभी सोचा है कि जब दो लोग झगड़ा कर रहे होते हैं तो वह पास-पास होते हुए भी क्यों चिल्ला कर बात करते हैं, क्योंकि वह दिल से दूर होते हैं और दिमाग दूरी की गणना में गड़बड़ा जाता है और उसे लगता है कि जोर से बोलना पड़ेगा। वहीं जब दो लोग प्यार से बात करते हैं तो फुसफुसा के भी काम चल जाता है क्योंकि दिमाग यह सोच लेता है कि यह लोग बहुत पास-पास हैं और जानते हैं कि जब दो लोग बहुत ही निकट हो जाते हैं तो बिना आवाज के भी संदेशों का आदान-प्रदान हो जाता है क्योंकि दिलों की दूरियाँ मिटने से दिमाग दूरी का अंदाजा ही नहीं लगा पाता। कहने का तात्पर्य यह है कि आपकी आवाज की टोन दूसरो को यह अंदाजा करा देती है कि आप उनके कितने निकट हैं, अत: वार्तालाप के दौरान अपनी आवाज की टोन का बेहद ध्यान रखें।

**2. वार्तालाप की शुरुआत हमेशा श्रोता की तारीफ के साथ करें :**

अंग्रेजी की एक बहुत पुरानी कहावत है कि "फ्लैटरी फ्लैटर्स ऑल" अर्थात अपनी प्रशंसा सुनना सबको अच्छा लगता है। मैंने इसे अच्छे बुरे और बहुत बुरे हर तरह के व्यक्तियों पर आजमाया है और इसीलिए दावे के साथ कह सकता हूँ कि एक बार इसे आजमा के देखिये, नतीजा सिर्फ और सिर्फ सकारात्मक ही होगा। आप अगर किसी को बदलना चाह रहे हैं तो बहुत संभव है कि उसके साथ आपके हित जुड़े हैं फिर चाहे वह आपका परिजन हो, मित्र हो, सहपाठी हो अथवा सहकर्मी हो, आदि। उनमें कुछ तो अच्छाई अवश्य ही होगी, शुरूआत उनकी प्रशंसा से कीजिए और फिर मुख्य विषय पर आइये।

अगर आप किसी से वार्तालाप करने के इच्छुक हैं तो यह भी आवश्यक है कि दूसरा भी आपकी बात सुनने को तैयार हो। एक छोटा सा प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति पर करके देखिए जो आपसे बातचीत में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता। अगली बार उनसे वार्ता शुरू करने से पहले अपने चेहरे पर मुस्कान लाकर उन्हें सिर्फ इतना भर कहिये कि आप आज बहुत सुंदर लग रहे हैं, अथवा आपकी शर्ट बहुत सुन्दर है, अथवा क्या नई घड़ी पहनी है यह तो बहुत सुन्दर है, आदि। परन्तु ध्यान रहे कि यह तारीफ बिल्कुल मिथ्या ना हो, भले ही थोड़ी बढ़ा-चढ़ा कर हो। फिर देखिये कि वह महाशय आपसे बातचीत के लिए कैसे तत्पर नहीं होते।

**3. अनावश्यक वाद-विवाद से दूर रहें और आलोचना करने से बचें:**

अनावश्यक वाद-विवाद से बचने का एक ही सबसे सरल

उपाय है कि इससे बचा जाये। वाद-विवाद कब होता है जब आप किसी को अपनी बात समझाना चाहते हैं और दूसरा उसे समझने को तैयार नहीं होता क्योंकि उस विषय अथवा वस्तु पर जिसको लेकर विवाद है उसका अपना नजरिया होता है। अब प्रश्न यह है कि कौन सही है ? क्योंकि दोनों पक्ष अपने-आप को सही मानते हैं अत: विवाद बढ़ता जाता है। जरा समस्या को दूसरे के नजरिये से देखने का प्रयास कीजिए, हो सकता है विवाद ही सुलझ जाये। एक ग्राहक मारुति के शोरूम में गाड़ी पसंद करने गया और वहाँ जाकर सेल्समैन को होन्डा सिटी की खूबियाँ गिनाने लगा। सेल्समेन ने उसकी बातों को ध्यान से सुना और खुद भी कहा कि होन्डा सिटी बहुत अच्छी कार है, उसका इंजन बहुत अच्छा है, माइलेज ज्यादा है आदि। अब ग्राहक के पास कोई तर्क नहीं था। फिर धीरे से उसने मारुति की खूबियाँ गिनानी शुरू की और अन्तत: ग्राहक को मारुति का प्रशंसक बना दिया।

अगर आपको किसी की कोई बात अथवा कृत्य गलत लगा है तो सीधा यह कहने की बजाय की आप गलत हैं अथवा उसकी आलोचना कर देने से बेहतर है कि आप कह सकते हैं कि मेरे हिसाब से तो यह काम ऐसे होना चाहिए परन्तु मैं गलत भी हो सकता हूँ। आपका यह संबोधन दूसरे को भी यह सोचने पर मजबूर कर देगा कि कहीं वही तो गलत नहीं है। हर व्यक्ति की अपनी भावनाएं हैं और कई बार हम दिमाग के बदले दिल से निर्णय लेते हैं और अगर कोई हमें गलत साबित करने की कोशिश करे तो हम अपने निर्णय पर कठोर हो जाते हैं क्योंकि दूसरा आपकी भावनाओं को जाने-अनजाने ठेस पहुँचा रहा है। अगर आप उसकी भावनाओं का ख्याल रखते हुए अपनी बात कहते हैं तो दूसरा दिमाग से सोचने पर मजबूर हो जाता है। अगर कोई आपको गलत सिद्ध कर दे तो कृपया गलती को तहे दिल से स्वीकारिये, इससे दूसरे आपके खुले विचारों और साहस की सराहना ही करेंगे।

**4. अच्छे श्रोता बनिये और दूसरे को बोलने का मौका दीजिए :**

एक अच्छे श्रोता बनकर आप दुनिया को उस नजर से देख सकते हैं जिस नजरिये से वक्ता आपको दिखाना चाहता है, हो सकता है इससे आपकी समझ में इजाफा हो और आपकी उसके प्रति हमदर्दी बढ़े। आप दूसरों की पूरी बात सुनके उसको उत्तर देने के लिए सही शब्दों का चयन कर सकते हैं क्योंकि अब विषयवस्तु पर आप उसके नजरिये से वाकिफ हैं। परन्तु सुनना उतना ही मुश्किल है जितना बोलना, विशेषकर विवाद की स्थिति में। अत: सुनने की आदत डालने के लिए भी प्रयास चाहिए।

किसी की बात को ध्यान से सुनने और उसकी समस्या को समझने के लिए आवश्यक है कि आप उसकी बात गौर से आँख मिलाकर सुनें अन्यथा आपका दिमाग कुछ और सोचने लगेगा और आप सिर्फ उतनी ही बात सुनेंगे जितनी आप सुनना चाहते हैं। जैसा कि हमने पहले चर्चा की कि व्यक्ति संवाद के दौरान सिर्फ शब्दों का ही प्रयोग नहीं करता बल्कि अपने शरीर और हाव-भाव से भी बहुत कुछ कह जाता है जिसे सुनने और समझने के लिए पूरी एकाग्रता चाहिए हो सकता है कि आपकी सहानुभूति पाकर वह आपको अपना मित्र मान ले। वार्तालाप के बीच में टोका-टाकी और पूरी बात सुने बिना ही अगर आप समस्या का हल ढूँढ़ने लगते हैं तो हो सकता है कि आप दूसरे का दृष्टिकोण समझे बिना ही अपना उत्तर दे देंगे जो उसे नागवार गुजर सकता है।

**5. दूसरों को अपना सम्मान बचाने का मौका दीजिए:**

एक भद्र महिला ने घरेलू कामकाज और बच्चों की देखभाल के लिए एक केयरटेकर महिला; कमला से बातचीत की और उसे दूसरे दिन से काम पर आ जाने के लिए कहा। इसी बीच उन महिला से उसके दूसरे मालिकों ने बातचीत की जहां वह पहले काम करती थी और कुछ ज्यादा अच्छा सुनने को नहीं मिला।

दूसरे दिन जब कमला काम पर आयी तो उन भद्र महिला ने उससे कहा कि मैंने वहाँ फोन किया था जहाँ तुम पहले काम करती थीं। उन्होंने बताया कि तुम ईमानदार और भरोसेमंद हो, खाना बहुत अच्छा पकाती हो और बच्चों की देखभाल भी जिम्मेदारी के साथ करती हो। पर मुझे समझ नहीं आया कि

वह ऐसा क्यों कह रही थीं कि तुम घर को साफ-सुथरा और ठीक-ठाक नहीं रखती। मुझे लगता है कि वह झूठ बोल रही थी क्योंकि तुम तो अपने आप को इतना साफ-सुथरा रखती हो, तुमने कपड़े भी साफ और सलीके से पहने हुए हैं, मुझे विश्वास है कि तुम घर को भी साफ-सुथरा ही रखोगी और हमारी अच्छी बनेगी। कमला ने भी उनको विश्वास दिलाया कि वह उनको कोई शिकायत का मौका नहीं देगी और वर्षों तक दोनों के बीच में अच्छी जमी क्योंकि केयरटेकर ने अपनी मालकिन के विश्वास पर खरा उतरने के लिए कभी उनको शिकायत का मौका ही नहीं दिया।

**जिंदगी में आपका पाला ऐसे बहुत से धूर्त व्यक्तियों से पड़ेगा जहाँ आप जानते हैं कि आपका पाला किससे पड़ा है और आपको क्या-क्या सावधानी बरतनी है।** यूँ तो सावधान रहिए पर उसे जताइये कि आप उस पर पूर्ण विश्वास करते हैं और हो सकता है कि आपके विश्वास पर खरा उतरने के लिए ही वो आपसे ईमानदारी से पेश आये क्योंकि यही सोचकर वह प्रसन्न हो जायेगा कि कोई तो है जो इस पर विश्वास करता है।

**6. उत्साहवर्धन हेतु चुनौती दीजिए:**

एक स्टील कम्पनी के वरिष्ठ उत्पादक प्रबंधक अपने सयंत्र के गिरते उत्पादन से चिन्तित थे, दिन की पाली के समापन समय वह संयंत्र में पहुँचे और शिफ्ट प्रबंधक से पूछा आज कितनी हीट बनी, उसने बताया 6, बिना एक भी शब्द बोले उन्होंने दीवार पर चॉक से बड़ा-बडा 6 लिख दिया और बिना एक भी शब्द बोले वापिस अपने कार्यालय चले गये। रात की पाली के शिफ्ट प्रबंधक और उनके साथियों ने इसे अपने लिए चुनौती समझा और रात की पाली में 7 हीट बना डाली और पाली की समाप्ति पर 6 को मिटाकर 7 लिख दिया और प्रसन्नतापूर्वक अपने घर को गये कि हमने दिन की शिफ्ट वालों को हरा दिया। दिन की पाली ने इस चुनौती को स्वीकार किया और दूसरे दिन 10 हीट बना डाली। इस तरह वरिष्ठ प्रबंधक ने बिना एक शब्द बोले अथवा बिना कोई प्रलोभन दिये अपने उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। हर व्यक्ति अथवा समूह दूसरे से आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा में अपना सर्वोत्तम देने का प्रयास करता है, बस आवश्यकता है उनके अन्दर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना भरने की और उन्हें उनके श्रेष्ठ होने का अहसास दिलाने की।

**7. सिर्फ सुनी-सुनायी बातों पर किसी के बारे में धारणा न बनाएं:**

एक दिन महाज्ञानी सुकरात से मिलने उनका एक परिचित आया और बोला कि क्या आप जानते हैं मैने आपके मित्र के बारे में क्या सुना है? सुकरात मुस्कराकर बोले कि मैं तुम्हारी बात सुनने से पहले चाहता हूँ कि तुम एक छोटा सा टेस्ट पास करो 'ट्रिपल फिल्टर टेस्ट' अर्थात हम जाँच लें कि जो तुम मेरे मित्र के बारे में बताने जा रहे हो वह मेरे सुनने लायक है कि नहीं।

पहले यह बताओ की क्या तुम आश्वस्त हो कि जो बताने जा रहे हो वह पूरी तरह सच है? परिचित ने कहा कि नहीं मैंने तो बस यह किसी से सुना है।

अब यह बताओ कि क्या जो तुम मेरे मित्र के बारे में बताना चाह रहे हो वह अच्छा है? उसने कहा नहीं वरन् यह तो उसके उलट है।

सुकरात ने कहा चलो कोई बात नहीं, अभी भी एक टेस्ट बाकी है, बताओ कि जो तुम मेरे मित्र के बारे में बताने जा रहे हो क्या वह मेरे लिए उपयोगी है? परिचित ने कहा, नहीं, कुछ खास नहीं।

तब सुकरात बोले जो तुम मुझे मेरे मित्र के बारे में बताना चाहते हो ना वह सत्य है, ना अच्छा है और ना ही मेरे लिए उपयोगी है तो उसे सुनने से क्या लाभ और वह अपने काम में व्यस्त हो गये।

आज उन्नत टेक्नालॉजी का युग है, संचार के माध्यम इतने तेज हैं कि हम दिन भर लोगों के बारे में कुछ ना कुछ सुनते रहते हैं और इन्हीं सुनी-सुनायी बातों पर भरोसा करके दूसरे के बारे में अपने मन में एक छवि बना लेते हैं। विडम्बना यह है कि हमारी यह भावनाएं तब भी हमारे साथ होती हैं जब हम उसी व्यक्ति से मिलते हैं अथवा वार्तालाप करते हैं। इससे हमारे अहित की ही संभावना बढ़ जाती है क्योंकि हमारे मन

की भावनाएं जाने-अनजाने उनसे हमारे संवाद के दौरान हमारे गैर मौखिक संचार अर्थात् बॉडी लेंग्वेज को प्रभावित करती है और दूसरों को आहत। जबकि हो सकता है कि आपने जो सुना है वह सत्य ही ना हो और आप नाहक ही अपना मित्र खो बैठें। स्मरण रहे यहाँ तो हम दिल जीतने की कला सीखने की कोशिश कर रहे हैं न कि किसी को नाराज अथवा आहत करने की।

**8. दूसरों को नाराज अथवा आहत किये बिना बदलने की कला जानिये:**

अगर आप किसी को बिना नाराज या आहत किये बदलना चाहते हैं तो निम्न बातों का सदैव ध्यान रखिये:

1. वार्तालाप की शुरुआत उनकी ईमानदार तारीफ के साथ करें।

2. अनावश्यक वाद-विवाद से बचें।

3. गलतियों पर ध्यान घुमा-फिरा के करायें।

4. दूसरे की आलोचना करने से पहले अपने द्वारा की गई ऐसी गलतियों के बारे में बतायें।

5. सीधा आदेश देने के बजाये उसी बात को प्रश्न के रूप में पूछे अर्थात क्या हम ऐसा करें तो अच्छा नहीं होगा?

6. दूसरे को अपना पक्ष रखने का मौका दें।

7. अगर दूसरे में बदलाव का जरा भी लक्षण दिखायी दे तो उसकी तारीफ करें और हर सुधार पर यह प्रक्रिया दुहराते रहें।

8. किसी भी व्यक्ति को पैसे से ज्यादा अपनी प्रतिष्ठा का ख्याल होता है, उन्हें सम्मानपूर्वक रहने योग्य प्रतिष्ठा दें।

9. वार्तालाप के दौरान उसे गलती सुधारने के लिए यह कहकर प्रेरित करें कि यह कोई इतनी बड़ी गलती नहीं है कि उसे सुधारा ही ना जा सके।

10. उसको सकारात्मक अहसास कराएं ताकि वह आपके सुझाव को खुसी-खुशी मान सकें।

अन्त में, एक बार इसे दुहरा लें कि किसी का भी दिल जीतना एक कला है और किसी भी कला में पारंगतता प्राप्त करने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है। अपने आप को बदलना भी एक चुनौती है परन्तु उपरोक्त छोटी-छोटी बातों पर अमल शुरू तो कीजिए और अपने जीवन में होने वाले सकारात्मक बदलावों को महसूस कीजिए। कुछ ही समय में आप अपने परिजनों, सहकर्मियों एवं मित्रों के चहेते बन जायेंगे और हर कोई आपके निकट रहने का प्रयास करेगा क्योंकि आपके मीठे व्यवहार और बोलचाल से उनके दिलों को जीत लिया है।

उप महाप्रबंधक (शै.) एवं वरिष्ठ संकाय सदस्य
एम.टी.आई. सेल

**साभार : इस्पात भाषा भारती, मार्च** 2016

पृष्ठ 1 का शेषांश

# काश! हिन्दी की महत्ता...

ऊपर नहीं आ पायेंगे। संगठन में क्षेत्रवाद असंतुलन पैदा करता है। संगठन निर्माण में समानता का सिद्धान्त पालन किया जाना चाहिए इससे हिन्दी भाषी राज्यों को तरक्की का मौका मिलेगा। हिन्दी के मार्क्सवाद के प्रतिभावान लेखकों ने जितना काम किया है उतना काम किसी अन्य ने नहीं किया। हिन्दी के श्रेष्ठ समीक्षक, पत्रकार, लेखक, आलोचक, कवि, कहानीकार, उपन्यासकार आदि मार्क्सवादियों के यहाँ ही पैदा हुए हैं। आधुनिक काल का हिन्दी साहित्य का विमर्श हो या इतिहास लेखन हो इस मामले में हिन्दी भाषी समाज का योगदान अतुलनीय है। राहुल सांस्कृत्यायन, राम विलास शर्मा, यशपाल, मुक्तिबोध आदि की परम्परा में सैकड़ों लेखक हिन्दी में हैं जिन पर मार्क्सवाद का असर है और वे उसके प्रति आस्था भी रखते हैं। यह एक ऐसे समाज में पैदा हुए जहाँ कम्युनिष्ट आन्दोलन बेहद कमजोर है। कमजोर आन्दोलन और शानदार साहित्य परम्परा का असंतुलित विकास हिन्दी में ही संभव है। यह विरल फिनोमिना है। हिन्दी भाषी क्षेत्र में कम्युनिष्ट पार्टी की कोई दीर्घकालिक सांगठनिक नीति नहीं रही है इसके कारण भी समय-समय पर इस क्षेत्र में पैदा हुए कम्युनिष्ट उभार की रक्षा केन्द्रीय नेतृत्व नहीं कर पाया है। विभिन्न किस्म की गुटबाजियाँ और इरेशनल बातों को आधार बनाकर, उनकी उपेक्षा करना, पार्टी से निकालना, निंदा करना

आदि सामंती हथकंडों का व्यक्तिगत पंगे और स्कोर हासिल करने के लिए इस्तेमाल होता रहा है। इसके कारण बिहार, पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में जमे जमाए आन्दोलन को सुचिंतित ढंग से नष्ट किया गया। इसका परिणाम यह है कि आज इन राज्यों में कम्युनिष्ट ढूढ़ने से नहीं मिलते याद रखें एक कम्युनिष्ट को तैयार करने में बड़ा समय लगता है और हमारे बड़े कम्युनिष्ट नेता महज किसी सामान्य बात को असामान्य बनाकर उस व्यक्ति को संगठन से निकाल देते हैं जिसने खून पसीना एक करके संगठन बनाया होता है। वे भूल जाते हैं कि संगठन बनाने वाले को निकालने का मतलब संगठन की आत्मा को निकाल देना। संगठनकर्ता की आत्मा के बिना संगठन बेजान होता है, कागजी होता है। बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान आदि में कुछ-कुछ ऐसा ही घटा है। इसका असर हिन्दी भाषी समाज पर भी पड़ा है। आज हिन्दी भाषी समाज में युवाओं, बुद्धिजीवियों, स्त्रियों, किसानों आदि में प्रभाव पैदा करने वाले कम्युनिष्टों का अकाल है। जबकि एक जमाने में हिन्दी भाषी क्षेत्र में ऐसा नहीं था। कम्युनिष्ट पार्टियों के केन्द्रीय नेतृत्व की मानसिकता यह है कि हिन्दीभाषी क्षेत्र पिछड़ा है, जहाँ प्रतिभाशाली कम्युनिष्ट नहीं हैं। हिन्दी वाले सांस्कृतिक-राजनीतिक तौर पर पिछड़े हैं अत: उन्हें उपेक्षित रखो। इस बीमारी ने एक खास किस्म का गैर हिन्दीभाषी विवेक कम्युनिष्ट पार्टियों के नेताओं में पैदा किया है। इसके कारण कम्युनिष्ट पार्टियाँ आज भी हिन्दी भाषी क्षेत्र में पनप नहीं पायी हैं। इस मामले में कम्युनिष्टों को अपने शत्रुओं से सीखना चाहिए। खासकर आरएसएस से सीखना चाहिए। कम्युनिष्ट पार्टियों की मुश्किल यह है कि केन्द्रीय नेतृत्व अंग्रेजी प्रेम में डूबा हुआ है। जहाँ संगठन मजबूत है मसलन केरल, पश्चिमबंगाल और त्रिपुरा में वहाँ स्थानीय भाषा के आग्रहों में डूबे हुए हैं। जाहिर है कि अंग्रेजी, मलयालम, बांग्ला, त्रिपुरी से आप भारत की जनता के पास नहीं पहुँच सकते। मेरे लिए यह आश्चर्य और बेहद तकलीफ की बात है कि ईएमएस जैसा महापंडित कई दशक तक दिल्ली में रहने के बावजूद हिन्दी में बोलना नहीं सीख पाया। पश्चिम बंगाल का मुख्यमंत्री एक बार भी हिन्दी बोलने की कोशिश नहीं करता। मैं अभी तक यह समझने में असमर्थ हूँ कि जिस भाषा को भारत की सम्पर्क भाषा माना जाता है उसके प्रति कम्युनिष्ट नेताओं का रूख मित्रतापूर्ण नहीं है। आज भी कम्युनिष्ट पार्टी के हिन्दी अखबार बेहद खराब अवस्था में हैं। हिन्दी अखबार प्रकाशन के नाम पर अंग्रेजी अखबार का अनुवाद छापकर कम्युनिष्ट पार्टियाँ अपने कर्म की इतिश्री मान लेती हैं। वे यह महसूस ही नहीं करते कि हिन्दी अनुवाद की भाषा नहीं है। जाहिर है जब वे हिन्दी के बारे में महसूस ही नहीं करते तो देश की जनता के बड़े हिस्से तक उनकी पहुँच नहीं हो पाएगी। कम्युनिष्ट पार्टियाँ जब तक हिन्दीभाषी क्षेत्र को प्राथमिकता नहीं देतीं। हिन्दी के प्रति समानता और सम्मान का व्यवहार नहीं करतीं। अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं के मोहजाल से बाहर नहीं आतीं तब तक हिन्दी भाषी राज्यों में कम्युनिष्ट पार्टियों के विकास की संभावनाएं कम हैं। केन्द्रीय नेतृत्व के गैर कम्युनिष्ट व्यवहार के कारण बिहार, यू.पी. और राजस्थान में संगठन तबाह हो चुके हैं। भविष्य में इसके कारण हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और मध्यप्रदेश के संगठन भी नष्ट हो सकते हैं।

**–जगदीश्वर चतुर्वेदी**

कलकत्ता विश्वविद्यालय की फेसबुक वाल से साभार

**अगर आपको पत्रिका पढ़ने लायक लगे तो!**
**सदीनामा को श्रमराशि दे ही दें!!**

एक वर्ष : 100/-

पाँच वर्ष : 500/- रुपये,

आजीवन : 5,000/- रुपये

**Canara Bank** A/c Name : Sadinama Prakashan,
A/c No. : 1417201001441,
Type of Account : Current A/c
IFSC Code : CNRB001417
MICR Code : 700015031
पैसा जमा करके पता SMS कर दें।

ISSN : 2454-2121
R.N.I. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regn. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16



मूल्य : 5.00
E-mail : jjitanshu@yahoo.com


## डॉ० ललित फरक्या "पार्थ" की दो कविताएँ

### सम्बन्ध

चिड़ियों को चहचहाने दीजिए,
पक्षियों को कलरव करने दीजिए
पत्तों को सरसराने दीजिए,
वृक्षों को हिलोरने दीजिए,
सरिता को बहने दीजिए,
हिम-शिला को जमने दीजिए
सूर्य को तपने दीजिए
बयार को चलने दीजिए
बरखा को बरसने दीजिए,
इनके बीच कभी भी
अवरोध न खड़े कीजिए।
क्योंकि इन्हीं से जुड़ी है
हमारी साँसों की निर्बाध स्पन्दन
एवम् जीवन की गति

### साँसें

साँसे कितनी गहरी है
आंकोगे कैसे ?
धड़कन से ?
पलकों से ?
प्रतिश्वासों से ?
उसका पता तो तभी चलेगा
कि उनमें कितनी
गहराई है
कहाँ तक वे
समाई है।
अनन्त, असीम, अबाध्य
साँसों में ही
जीवन की निर्बंध
डोर लपेटाई है।

**"श्रद्धाश्रय"** 14, गोविन्द नगर,
दशपुर, मन्दसौर- 458001

## "फिटनेस एण्ड डाँस अकादमी" का वर्षिक उत्सव

फिटनेस एण्ड डांस अकादमी की स्थापना 2006 सितम्बर में हुई उसके बाद इस अकादमी को ब्रर्बोन रोड में शिफ्ट कर दिया। जिसमें डांस, योगा, फ्रेंच म्यूजिक, कराटे चेस इत्यादि सिखाये जाते हैं। 29/9/2016 को इन्होंने इस अकादमी का वार्षिक उत्सव मनाया जिसमें विवेक ने गणेश वन्दना करके प्रोग्राम की शुरूआत की। अध्यक्ष पुष्पा बांगड़ ने अकादमी के शिक्षकों को उपहार दिया। पहला नृत्य शिव तांडव था जो राघव राय, पार्थ घोष ने किया। उसके बाद के कई फिल्मी गानों पर एक्ट था। इन्होंने क्लासिकल नृत्य, योगा पर नृत्य आज जो देश के हालात हैं उस पर शहीद भगत सिंह पर नृत्य भी अति सराहनीय था। कराटे का नृत्य एक्ट और कम्प्यूटर पर जो एक्ट थे वे भी बहुत सुन्दर थे। यह अकादमी सरिता फूमड़ा द्वारा स्थापित की गई है। जिसमें साथ में विवेक फूमड़ा एवं सतीश जी, सन्नी जी, सौरभ जी का भी सहयोग रहता है। जो भी एक्ट बच्चे कर रहे थे वे अति सराहनीय थे। इससे अकादमी में जो शिक्षक बच्चों को सिखाते हैं उनके मनोयोग को दर्शाता है। इस कार्यक्रम का संचालन भावना ने किया। यह रपट **मीनाक्षी सांगानेरिया** ने लिखी।

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37 ए, बेंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24 Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित । **संपादक : जितेन्द्र जितांशु**
☎: 9231845289, 2470-4061, E-mail : jjitanshu@yahoo.com, R.N.I. No. WBHIN/2000/1974